INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान CET

Graduation Level

राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग

भाग - 1

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन + राजस्थान का इतिहास + संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान CET (स्नातक स्तर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान CET (स्नातक स्तर)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/29dvxg

Online Order करें - https://rb.gy/8kw806

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	राष्ट्रीय आंदोलन	
1.	भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाएं	1
2.	19 वीं एवं 20 वीं शताब्दी में सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन	32
3.	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन – विभिन्न अवस्थाएं	39
4.	देश के विभिन्न क्षेत्रों के योगदानकर्ता एवं योगदान	57
5.	1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान	68
6.	राजस्थान में किसान व जाति आंदोलन	73
7.	राजनीतिक जनजागरण	81
8.	प्रजामण्डल आंदोलन	86
9.	राजस्थान का एकीकरण	95
10.	स्वतंत्रयोत्तर राष्ट्र निर्माण – राष्ट्रीय एकीकरण	97
11.	राज्यों का पुनर्गठन	100
12.	नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान तकनीकी का विकास	101
	राजस्थान का इतिहास	
1.	प्राचीन सभ्यताएं	103
2.	राजस्थान के इतिहास की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएं	108
3.	प्रमुख राजवंश	113
4.	प्रमुख राजवंशों की प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था	159
5.	सामाजिक – सांस्कृतिक आयाम	162
	कला एवं संस्कृति	
1.	स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं	165
2.	कलाएं, चित्रकलाएं अऊर हस्तशिल्प	199
3.	राजस्थानी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ एवं क्षेत्रीय बोलियाँ	216
4.	मेले एवं त्यौहार	228
5.	लोक संगीत एवं लोक नृत्य	239
6.	राजस्थानी संस्कृति, परम्परा एवं विरासत	260
7.	वेशभूषा एवं आभूषण	265

8.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन	268
9.	लोक देवियाँ एवं लोक देवता	276
10.	महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल	286
11.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तिव	292

राष्ट्रीय आंदोलन

अध्याय – I

भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएं

यूरोपीय कम्पनियों का आगमन

भारत में आने वाली यूरोपीय कम्पनियों का क्रम

पुर्तगाली→डच→ब्रिटिश→डेनिश→फ्रांसीसी→ स्वीडस

वास्कोडिगामा

- यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगाली कम्पनी ने भारत में सबसे पहले प्रवेश किया। **भारत में आने के लिए इन्होंने नये समुद्री मार्ग की खोज की।** पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा ने 17 मई 1498 में भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह कालीकट पहुँचकर की। बन्दरगाह पर कथडाबू नामक स्थान पर पहुँचा।
- वास्कोडिगामा का स्वागत कालीकट के शासक जमोरिन ने किया। **पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत एवं यूरोप के मध्य व्यापार के क्षेत्र में एक नये युग का सूत्रपात हुआ।**
- भारत आने और जाने में हुए यात्रा व्यय के बदले में उसने 60 गुना अधिक धन कमाया। धीरे – धीरे अन्य पुर्तगाली व्यापारी भारत में आने लगे भारत में कालीकट, गोवा, दमन दीव और हुगली के बन्दरगाहों पर पुर्तगालियों ने अपनी व्यापारिक कोठियां स्थापित की

नोट :- पेट्रो अब्रेज केब्रोल भारत पहुँचने वाला दूसरा पुर्तगाली था।

1502 ई. में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया था।

- पुर्तगाली :- **1503 में पुर्तगालियों ने अपनी पहली फैक्ट्री कोचीन में स्थापित की थी।**
- दूसरी फैक्ट्री की स्थापना 1505 ई. में कन्नूर में की गई।

फ्रांसिस्को डी. अल्मोड़ा [1505 - 1509]

- **यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर / वायसराय बनकर आया था।** इसने 1509 में मिस्र, तुर्की व गुजरात की संयुक्त सेना को पराजित कर दीव पर अधिकार कर लिया।
- इसे पुर्तगाली सरकार ने आदेश दिया था कि यह भारत में ऐसे दुर्ग का निर्माण करे जिनका उद्देश्य बस केवल सुरक्षा न होकर हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगाली नियंत्रण स्थापित करना भी हो **(उसके द्वारा अपनाई नीति नीले या शांत जल की नीति कहलाई)**
- **यह पॉलिसी हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगीज नियंत्रण स्थापित करने के लिए अल्मेडा ने शुरु की थी।**
- पुर्तगाल की राजधानी –लिसवन

अल्फांसो डी. अल्बुकर्क (1509 - 1515)

भारत में पुर्तगाली शक्ति की वास्तविक नींव डालने वाला अल्फांसो डी. अल्बुकर्क था।

- जो सर्वप्रथम 1509 ई. में भारत आया और उसी समय (1509 ईस्वी) उसने कोचीन में पुर्तगालियों के प्रथम - दुर्ग का निर्माण करवाया।
- 1509 ई. में अल्बुकर्क भारत में पुर्तगालियों का गवर्नर नियुक्त हुआ।
- 1510 ई. पुर्तगालियों ने गोवा के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया, जो उस समय बीजापुर के यूसुफ आदिल शाह सुल्तान के अधीन था।
- **1511 ई. में अल्बुकर्क ने मलक्का और 1515 ई. में फारस की खाड़ी में अवस्थित हर्मुज बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया।**
- अल्बुकर्क ने अपने क्षेत्र में **सती प्रथा बन्द करवा दी।**
- **अल्बुकर्क राजा राममोहन राय का पूर्व गामी था।**
- पुर्तगीजों को भारतीय स्त्रियों से विवाह के लिए अल्बुकर्क ने प्रोत्साहित किया।
- अल्बुकर्क ने पुर्तगीज सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारम्भ की।

निन्हो डी. कुन्हा (1529-1538)

अल्बुकर्क के बाद दूसरा महत्वपूर्ण पुर्तगाली गवर्नर निन्हो डी. कुन्हा था। जिसने 1529 ई. में भारत में कार्य भार ग्रहण किया।

- **कुन्हा ने 1530 ई. में शासन का प्रमुख केन्द्र कोचीन के स्थान पर गोवा को बनाया।**
- कुन्हा ने दमन, सालसेट, चौल, बम्बई सेन्टटॉमस, मद्रास और हुगली में पुनः अपने केन्द्र स्थापित किये।
- कुन्हा ने हुगली और सैनथोमा मद्रास के पास पुर्तगाली बस्तियों को स्थापित किया।
- **भारत में प्रथम पादरी फ्रांसिस्को जेवियर का आगमन पुर्तगाली गवर्नर मार्टिन डिसूजा 1542-1545 के समय हुआ।**
- पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर से होने वाले आयात निर्यात पर एकाधिकार स्थापित कर लिया।
- मुग़ल शासक अकबर के दरबार में दो पुर्तगाली इसाई पादरियों मोंसरेट तथा फादर एकाबिवा का आगमन हुआ।
- **भारत में तम्बाकू की खेती, जहाज निर्माण एवं तथा प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत पुर्तगालियों के आगमन के पश्चात् हुई।**
- **पुर्तगालियों ने ही सन् 1556 में प्रथम प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की।**
- 1661 ई. में तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट (अंग्रेज) चार्ल्स द्वितीय ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह कर लिया और पुर्तगालियों ने चार्ल्स द्वितीय को मुम्बई द्वीप दहेज में दे दिया।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- बंगाल के शासक 'मसूद शाह' द्वारा पुर्तगालियों को चटगाँव और सतगाँव में व्यापारिक कम्पनियाँ खोलने की अनुमति दी गई।
- 'अकबर' की अनुमति से हुगली में कम्पनी की स्थापना की गई।

- शाहजहाँ ने पुर्तगालियों के अधिकार से 'हुगली' को छीन लिया था।

कार्टज आर्मेडा काफिला व्यवस्था :- यह समुद्री व्यापार पर नियंत्रण व्यवस्था थी। इसके अन्तर्गत कोई भी भारतीय या अरबी जहाज बिना 'परमिट' लिए अरब सागर में नहीं जा सकता था।

इन जहाजों में ***काली मिर्च व गोला बारूद ले जाना मना था।***

<u>पुर्तगालियों के पतन के कारण</u>

- पुर्तगालियों का भ्रष्ट शासन, दोषपूर्ण व्यापार प्रणाली, धार्मिक और वैवाहिक नीति, योग्य शासकों का अभाव, स्पेन द्वारा पुर्तगाल का विलय, डचों का प्रवेश एवं सैन्य चुनौती आदि पुर्तगालियों के पतन के कारण बनें ।

<u>पुर्तगालियों की भारत को देन</u>

- ***मध्य अमेरिका से तम्बाकू, मूंगफली, आलू, मक्का, पपीता और अमरुद का भारत में प्रवेश पुर्तगालियों ने कराया।***
- बादाम, लीची, संतरा, अनानास एवं काजू का प्रवेश अन्य देशों से भारत में पुर्तगालियों के माध्यम से हुआ।
- जहाज निर्माण तथा प्रिंटिंग प्रेस (1556 ई.) की स्थापना भारत में पुर्तगालियों ने प्रारम्भ की।
- ***पुर्तगालियों द्वारा भारत में गोथिक स्थापत्य कला का आगमन हुआ।***

<u>डच</u>

- डच पुर्तगालियों के बाद भारत आये।
- डच नीदरलैण्ड व हॉलैण्ड के निवासी थे।
- डचों की कम्पनी का नाम यूनाइटेड ईस्ट इण्डिया कम्पनी ऑफ नीदरलैण्ड था, की स्थापना 1602 में की थी। वास्तविक नाम वेरींगीडे ओस्त इन्डिशे कम्पनी था ।
- ***डचों ने भारत में अपनी "प्रथम फैक्ट्री" 1605 ई. में मसूली पट्टनम में स्थापित की ।***
- डचों का भारत में प्रथम दल "कार्नेलियस डी हाउटमैन के नेतृत्व में भारत आया । वह भारत आने वाला प्रथम डच नागरिक था ।
- डचों नें 1602 ई. में गुजरात, कोरोमण्डल तट एवं बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा में व्यापारिक फैक्ट्रियाँ स्थापित की ।
- डचों ने मसूली पट्टनम, पुलीकट, सूरत, कराइकल, बालासोर, नागपट्टनम और कोचीन में कोठियाँ खोली ।
- डचों ने बंगाल में पहली फैक्ट्री '1627' में पीपली - (स्थाई कम्पनी) में स्थापित की।
- ***'1653' में डचों ने हुगली के निकट चिनसुरा में अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की ।***
- चिनसुरा (बंगाल) में डचों ने गुस्ताबुस नामक किले का निर्माण किया।
- इसके बाद डचों ने 'कासिमबाजार' और 'पटना' में फैक्ट्री स्थापित की।
- कोचीन और कन्नानोर डचों के प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे।
- '1690 ई.' के बाद पुलीकट के बदले नागपट्टनम डचों का मुख्य केन्द्र बन गया।
- ***डच मुख्यतः मसालों, नील, कच्चे रेशम, वस्त्र, अफीम व शोरा का व्यापार करते थे।***
- डचों की ***व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता (Cartel) पर आधारित थी।***
- '1759' में अंग्रेजों एवं डचों के मध्य बेदरा का युद्ध हुआ, जिसमें डच पराजित हुए और उनका भारत से अन्तिम रुप से पतन हो गया।
- बेदरा के युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व लार्ड क्लाइव ने किया।
- ***नोटः- 'मसूली पट्टनम और सूरत से' डच 'नील' का निर्यात करते थे ।*** भड़ौच बन्दरगाह से डच कपड़े का निर्यात करते थे।
- पुलीकट में डच अपने स्वर्ण पैगोडा (सिक्के) डालते थे ।
- सूती कपड़ा, रेशम, अफीम तथा शोरा बंगाल से डचों द्वारा निर्यात किये जाते थे।
- भारत में अफीम डचों द्वारा जावा और चीन में निर्यात किया जाता था।
- डच फैक्ट्रियों के प्रमुखों को फैक्टर कहा जाता था।
- डच कम्पनी के निदेशकों को भद्रजन XVII कहा जाता था।

<u>अंग्रेज</u>

भारत आने वाला प्रथम अंग्रेज यात्री जॉन मिल्डेन हॉल था जो स्थल मार्ग से '1597' में आया था।

- भारत में कैप्टन हॉकिन्स '1608 ई.' में समुद्री मार्ग से होकर (Red Dragon) नामक व्यापारिक जहाज से सूरत बन्दरगाह पर आया।
- हॉकिन्स प्रथम अंग्रेज था जिसने भारत की भूमि पर समुद्री मार्ग से प्रवेश किया था ।
- 1599 ई. में लन्दन में व्यापारियों के एक समूह ने The Governor and company of merchants of trading into the east Indies नामक कम्पनी की स्थापना पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने हेतु की।
- 31 दिसम्बर 1600 ई. में ब्रिटेन की महारानी एलीजाबेथ प्रथम ने एक शाही फरमान देकर इस कम्पनी को '15 वर्षों' के लिए पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने की अनुमति प्रदान की।
- ईस्ट इंडिया कम्पनी ने '1608 ई.' में सूरत में एक व्यापारिक कोठी खोली।
- जेम्स प्रथम के एक पत्र के साथ कैप्टन हॉकिन्स को '1608' में भारत भेजा।
- '1609 ई.' में कैप्टन हॉकिन्स बादशाह जहाँगीर से आगरा में मिला था।
- ***जहाँगीर ने हॉकिन्स को चार सौ का मनसब तथा एक जागीर और 'खान की उपाधि' दी।***
- कैप्टन हॉकिन्स तुर्की और फारसी भाषा का ज्ञाता था।

- माधवराव प्रथम की मृत्यु 1772 ई. को क्षयरोग से हो गई।
- **ग्रांड टफ के अनुसार, "उसकी मृत्यु मराठों के लिए पानीपत की पराजय से भी अधिक हानिकारक सिद्ध हुई"।**
- पेशवा माधव राव की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई नारायण राव पेशवा बना।
- रघुनाथ राव ने नारायण राव पेशवा की हत्या कर दी और स्वयं पेशवा बना।

माधव नारायण राव (1774-96 ई.)

- यह नारायण राव का पुत्र था।
- नाना फड़नवीस के नेतृत्व में मराठा राज्य की देखभाल के लिए 'बारा भाई कौंसिल' की नियुक्ति की।
- अक्टूबर 1796 ई. में पेशवा माधव नारायण राव ने आत्महत्या कर ली।

बाजीराव द्वितीय (1796-1818 ई.)

- बाजीराव द्वितीय राघोबा का पुत्र था।
- मार्च 1800 ई. में नाना फड़नवीस की मृत्यु हो गई।
- फड़नवीस की मृत्यु के बाद मराठा शक्ति पेशवा बाजीराव द्वितीय के हाथ में रही।
- बाजीराव द्वितीय को अंग्रेजों ने 8 लाख रु. पेंशन देकर विठु क्षेत्र दिया।
- **उसका उत्तराधिकारी उसका दत्तक पुत्र नानासाहब (धोंधू पंत) हुआ, जिसने 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।**

आंग्ल-मराठा युद्ध

सूरत की संधि

- **7 मार्च 1775 ई. को बम्बई की अंग्रेजी सरकार एवं रघुनाथ राव के मध्य 'सूरत की संधि' हुई।**
- **इस संधि में तय हुआ कि अंग्रेज रघुनाथ राव को पेशवा बनाने के लिए 2500 सैनिकों की सहायता देंगे।**
- मराठे, बंगाल, कर्नाटक पर आक्रमण करना बन्द कर देंगे।
- यदि रघुनाथ राव ने पूना दरबार से कोई संधि की तो उसमें अंग्रेजों को सम्मिलित किया जायेगा।

प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-82 ई.)

- 18 मई 1775 ई. में 'आरस के मैदान' में अंग्रेजों और मराठों के मध्य अनिर्णायक युद्ध हुआ। जिसमें मराठों की हार हुई।

[i] पुरन्दर की संधि (1776 ई.) : अंग्रेज सरकार और पूना दरबार के प्रतिनिधि नाना फड़नवीस के मध्य। मार्च 1776 ई. को पुरन्दर की संधि हुई।

[ii] बड़गाँव की संधि (1779 ई.) : पुणे दरबार एवं अंग्रेजों के बीच यह संधि हुई।
वारेन हेस्टिंग्स ने इस संधि को मानने से इन्कार कर दिया।

[iii] सालबाई की संधि (1782 ई.) :- महादजी सिंधिया की मध्यस्थता से पूना दरबार एवं अंग्रेजों के बीच यह संधि 17 मई 1782 ई. में हुई।

- इस संधि के द्वारा आंग्ल-मराठा युद्ध रुका।
- इस संधि से अंग्रेजों ने रघुनाथ राव का साथ छोड़कर माधव नारायण राव को पेशवा माना।

द्वितीय आंग्ल- मराठा युद्ध (1803 - 06 ई.)

1800 ई. में नाना फड़नवीस की मृत्यु के बाद पूना दरबार षड़यंत्रों का केंद्र बन गया था। **लार्ड वेलेजली का मानना था कि भारत को नेपोलियन से बचाने का एक मात्र उपाय सभी भारतीय राज्यों का अधिग्रहण करना था।**
1801 में पेशवा बाजीराव द्वितीय ने जसवंत राव होल्कर के भाई विठू जी की हत्या कर दी। जिससे क्रोधित होल्कर ने पूना पर आक्रमण कर पेशवा और सिंधिया की सेना को पराजित कर दिया। पूना पर होल्कर का नियंत्रण हो गया बाजीराव ने भागकर बसीन में शरण ली

1802 में बाजीराव द्वितीय और अंग्रेजों के बीच बसीन की संधि हुई।

बसीन की संधि की शर्ते निम्नलिखित हैं -

1. कम्पनी को सूरत मिल गया
2. पेशवा ने अंग्रेजी संरक्षण स्वीकार कर लिया
3. पेशवा ने पूना में अंग्रेजी सेना को रखना स्वीकार किया।
4. पेशवा ने अपने विदेशी मामले कम्पनी के अधीन कर लिए।
5. पेशवा ने कम्पनी के किसी भी यूरोपीय शत्रु को नहीं रखना स्वीकार किया।

- **यह युद्ध दो मुख्य केन्द्रों में शुरू हुआ।**

[i] दक्कन : वेलेजली के अधीन अंग्रेजी सेना एवं सिंधिया व भोसले की संयुक्त सेना के बीच यह युद्ध हुआ जिसमें वेलेजली विजयी हुआ।

[ii] जनरल लेक के अधीन अंग्रेजी सेना एवं सिंधिया के बीच उत्तर भारत में यह युद्ध हुआ जिसमें अंग्रेजी सेना विजयी हुई।

- देवगाँव की संधि (1803 ई.) : यह संधि 17 अक्तूबर 1803 ई. की रघुजी भौंसले एवं अंग्रेजों के बीच हुई।
- सुरजी अर्जन गाँव की संधि (1803 ई.) : सिंधिया एवं अंग्रेजों के मध्य 30 दिसम्बर 1803 ई. को यह संधि हुई।
- अंग्रेजों ने होल्कर को युद्ध में परास्त करने के बाद 1805 में राजपुरघाट की संधि की

तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-1818 ई.)

- यह युद्ध पेशवा एवं अंग्रेजों के मध्य हुआ, जिसमें अंग्रेजों की जीत हुई।
- **13 जून 1817 ई. में पेशवा एवं अंग्रेजों के मध्य पूना की संधि हुई। संधि के तहत पेशवा को मराठा संघ की अध्यक्षता त्यागनी पड़ी।**
- 5 नवम्बर 1817 ई. में दौलत राव सिंधिया एवं अंग्रेजों के मध्य "ग्वालियर की संधि"हुई।
- 27 मई 1816 ई. में नागपुर के भोसले एवं अंग्रेजों के मध्य 'सहायक संधि' हुई।
- 6 जनवरी 1818 ई. में होल्कर एवं अंग्रेजों के मध्य 'मन्दसौर की संधि' हुई।

- अंग्रेज़ों एवं पेशवा के मध्य और दो बार संघर्ष हुआ। जिसमें –कोरेगाँव जनवरी 1818 ई. जिसमें पेशवा की हार हुई।
- दूसरा संघर्ष अण्टी में फरवरी 1818 ई. में हुआ इसमें भी पेशवा की हार हुई।
- 3 जून 1818 ई. में पेशवा बाजीराव द्वितीय ने आत्म समर्पण जान मेल्कम के सामने कर दिया।

- **गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय**

गवर्नर जनरल:

ब्रिटिश भारत में 1773 ई. से 1857 ई. के बीच तेरह गवर्नर जनरल आए। इनके शासनकाल में निम्नांकित मुख्य घटनाएं एवं विकास हुए-:

वारेन हेस्टिंग (1772 - 1785)

- **दोहरी शासन प्रणाली]Dual Government System (की समाप्ति) जो बंगाल के गवर्नर (राबर्ट क्लाइव द्वारा शुरू किया गया था)।**
- **प्रथम गवर्नर जनरल बंगाल का वारेन हेस्टिंग्स था।**
- 1773 ई. रेग्यूलैटिंग एक्ट।
- 1774 ई. में रोहिल्ला युद्ध एवं अवध के नवाब द्वारा रूहेलखण्ड पर अधिकार।
- 178। ई. का एक्ट (इसके द्वारा गवर्नर जनरल परिषद् एवं कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट न्यायिक अधिकार क्षेत्र का निर्धारण किया गया।
- 1782 में सालबाई की संधि एवं (1775-82) में प्रथम मराठा युद्ध।
- **1784 ई. का पिट्स इंडिया एक्ट।**
- **द्वितीय मैसूर युद्ध (1780-84)**
- सुरक्षा प्रकोष्ठ या घेरे की नीति का संबंध (वारेन हेस्टिंग्स एवं वेलेजली)
- 1785 ई. इंग्लैंड वापसी के बाद हाउस ऑफ लॉर्डस में महाभियोग का मुकदमा चलाया गया।
- 1784 ई. में सर विलियम जोंस एवं हेस्टिंग्स द्वारा एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाली स्थापना करना।

लॉर्ड कार्नवालिस -: 1786 - 1793 (1805)

- **1790 - 92 ई .में तृतीय मैसूर युद्ध ।**
- 1792 ई. में श्रीरंगपटनम की संधि
- **1793 ई. में बंगाल एवं बिहार में स्थायी कर व्यवस्था जमींदारी प्रथा की शुरुआत।**
- 1793 ई. में न्यायिक सुधार।
- **विभिन्न स्तरों के कोर्ट की स्थापना।**
- **कर प्रशासन को न्यायिक प्रशासन से अलग करना।**
- **सिविल सर्विस की शुरुआत।**
- प्रशासन तथा शुद्धिकरण के लिए सुधार।
- स्थायी बंदोबस्त प्रणाली को इस्तमरारी, जमींदारी, माल गुजारी एवं बीसवेदारी आदि नाम से भी जाना जाता है।

सर जॉन शोर (1793 - 98):-

- स्थायी बंदोबस्त (1993) को शुरू करने में इन्होंने 'राजस्व बोर्ड अध्यक्ष के रुप में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लेकिन उनके गवर्नर जनरल काल में कोई महत्त्वपूर्ण घटना नहीं हुई।

लॉर्ड वेलेजली (1798-1805) :-

- लॉर्ड वेलेजली 1798 से 1805 तक बंगाल का गवर्नर जनरल रहा। उसके कार्यकाल में अंतिम मैसूर युद्ध लड़ा गया।
- **इस युद्ध के बाद मैसूर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधीन आ गया।**
- लॉर्ड वेलेजली के काल में **द्वितीय मराठा युद्ध लड़ा गया था** जिसमें अंग्रेजों की विजय हुई। यह कम्पनी राज के सबसे महत्वपूर्ण युद्धों में से एक था।
- पहले एंग्लो-मराठा युद्ध में मराठों की विजय हुई थी और दूसरे मराठा युद्ध में मराठों की पराजय हुई जिसका कारण मराठों के पास कोई अनुभवी और योग्य शासक न होना था।
- दूसरा मराठा युद्ध 1803 से 1805 तक लड़ा गया जिसके बाद मराठों का राज्य महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों में ही रह गया।
- औरंगाबाद, ग्वालियर, कटक, बालासोर, जयपुर, जोधपुर, गोहाद, अहमदनगर, भरोच, अजन्ता, अलीगढ़, मथुरा, दिल्ली ये सब अंग्रेजों के अधिकार में चले गए।
- सिंधिया और भोसले ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- **उसने सहायक संधि की शुरुआत** की जिसके तहत भारत के राजा ब्रिटिश सेना और अधिकारी को अपने राज्य में स्वीकार करेंगे, किसी भी विवाद में राजा ब्रिटिश सरकार को स्वीकार करेगा, वो ब्रिटिश के अलावा अन्य यूरोपियों को अपने यहाँ नौकरी पर नहीं रख सकता, इसके अलावा इस संधि में यह भी था कि राजा भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी का प्रभुत्व स्वीकार करेंगे।
- लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि को सर्वप्रथम मैसूर के राजा (1799), तंजौर के राजा (1799), अवध के नवाब (1801), पेशवा (1801), बरार के राजा (1803), सिंधिया (1804), जोधपुर, जयपुर, बूंदी और भरतपुर के राजा थे।
- उसने 10 जुलाई 1800 को फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।
- उसने 1799 में सेंसरशिप एक्ट पारित किए जिसका उद्देश्य फ्रांस की मीडिया पर नियंत्रण करना था।

नोट:

- सहायक संधि को स्वीकार करने वाला पहला शासक - अवध का नवाब (1765)
- वेलेजली की सहायक संधि को स्वीकार करने वाला प्रथम शासक - हैदराबाद निजाम (1798)

लॉर्ड मिन्टो प्रथम (1807-13):-

- मिन्टो के पहले सर जार्ज बार्लो वर्ष (1805-07) के लिए गवर्नर जनरल बना।

किट्टूर विद्रोह

किट्टूर के स्थानीय शासक की विधवा रानी चेन्नमा ने किया क्योंकि अंग्रेजों ने राजा के दत्तक पुत्र को मान्यता नहीं दी यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने दमनात्मक कार्यवाही द्वारा इस विद्रोह को दबा दिया यह विद्रोह 1824 से 1829 ईस्वी तक चला

कच्छ विद्रोह (1819)

- **कच्छ के राजा भारमल को अंग्रेजों द्वारा शासन से बेदखल करना कच्छ विद्रोह का मुख्य कारण था।**
- अंग्रेजों ने कच्छ के अल्प वयस्क पुत्र को वहां का शासक बना दिया और भू-कर में वृद्धि कर दी इसके विरोध स्वरूप भारमल और उसके समर्थकों ने 1819 में यह विद्रोह शुरू कर दिया

भारत के अन्य प्रमुख विद्रोह

पॉलीगार विद्रोह 1801

तमिलनाडु में नई भूमि व्यवस्था लागू करने के बाद ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सन 1801 ईस्वी में वहां के स्थानीय पॉली वालों ने वीपी कट्टा बामन्नान के नेतृत्व में विद्रोह किया गया और यह विद्रोह 1856 ईस्वी तक चला।

पाइक विद्रोह (1817)

मध्य उड़ीसा में पाइक जनजाति द्वारा सन् 1817 ईस्वी से 1825 ईस्वी तक यह विद्रोह किया इस विद्रोह के नेतृत्व कर्ता बख्शीजग बंधु ने किया

सूरत का नमक विद्रोह (1817)

अंग्रेजों द्वारा **नमक के कर में 50 पैसे की वृद्धि** करने पर इसका विरोध करने के लिए 1844 ईस्वी में सूरत के स्थानीय लोगों ने यह विद्रोह किया इस **विद्रोह के परिणाम स्वरूप अंग्रेजों ने बढ़ाए नमक करों को वापस ले लिया।**

नागा विद्रोह (1931)

- नागा विद्रोह रोगमइ जदोनांग के नेतृत्व में भारत के पूर्वी राज्य नागालैंड में हुआ। नाग आंदोलन का मुख्य उद्देश्य नागा राज्य की स्थापना करके प्राचीन धर्म को स्थापित करना था।
- अंग्रेजों ने नेता जदोनांग को गिरफ्तार करके 29 अगस्त 1931 को फांसी पर लटका दिया।
- इसके बाद में इस **आंदोलन की बागडोर एक नागा महिला गाँडिनल्यू ने अपने हाथों में ले ली इन्होंने नागा आंदोलन को गाँधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन से जोड़कर इस आंदोलन को विस्तारित किया।**
- गाँडिनल्यू ने पूर्व नेता जदोनांग के विचारों से प्रेरित होकर एक होर्का पंथ की स्थापना की।
- **पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् इस महिला को रानी की उपाधि से सम्मानित किया** और रानी गाँडिनल्यू को कारावास से मुक्त करके स्वतंत्र करवाया।

कोया विद्रोह (1879)

- कोया विद्रोह दो चरणों में हुआ पहले चरण का नेतृत्व टेम्पा सोरा ने किया और द्वितीय चरण में राजन अनंत शैय्यार नेतृत्व किया।
- कोया आंदोलन गोदावरी के पूर्वी क्षेत्र में रम्पा प्रदेश में शुरू हुआ। इस विद्रोह का मुख्य कारण आदिवासियों के जंगल संबंधी प्राकृतिक अधिकारों को अंग्रेजों द्वारा खेल लिया गया तथा कोया लोगों पर ताड़ी के घरेलू उत्पादन पर कर लगा देना मुख्य कारण था।
- राजू रम्पा में कोया विद्रोह का कुछ समय तक नेतृत्व किया द्वितीय चरण में कोया विद्रोह का नेतृत्व अनंत शैय्यार ने किया अंग्रेजों ने कठोर सैन्य कार्यवाही द्वारा कोया विद्रोह को समाप्त कर दिया।

ताना भगत आंदोलन

- ताना भगत आंदोलन की शुरुआत वर्ष 1914 ई. में बिहार में हुई थी। **यह आंदोलन लगान की ऊँची दर तथा चौकीदारी कर के विरुद्ध किया गया** था।
- इस आंदोलन के प्रवर्तक 'जतरा भगत' थे, जिसे कभी बिरसा मुण्डा, कभी जमी तो कभी केसर बाबा के समतुल्य होने की बात कही गयी है।
- आंदोलन की शुरुआत 'मुण्डा आंदोलन' की समाप्ति के क़रीब 13 वर्ष बाद 'ताना भगत आंदोलन ' शुरू हुआ। **यह ऐसा धार्मिक आंदोलन था, जिसके राजनीतिक लक्ष्य थे।**
- यह आदिवासी जनता को संगठित करने के लिए नये 'पंथ' के निर्माण का आंदोलन था। ताना भगत आंदोलन में अहिंसा को संघर्ष के अमोघ अस्त्र के रूप में स्वीकार किया गया।
- बिरसा आंदोलन के तहत झारखंड में ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ संघर्ष का ऐसा स्वरूप विकसित हुआ, जिसको क्षेत्रीयता की सीमा में बांधा नहीं जा सकता था।
- **इस आंदोलन ने संगठन का ढांचा और मूल रणनीति में क्षेत्रीयता से मुक्त रहकर ऐसा आकार ग्रहण किया कि वह महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जारी आज़ादी के 'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ' का अविभाज्य अंग बन गया।**

पहाड़ियाँ विद्रोह

- 1770 के विद्रोह के दसक में राजमहल के पहाड़ी क्षेत्रों वर्तमान झारखंड में ब्रिटिश भू- राजस्व व्यवस्था के विरोध में पहाड़िया विद्रोह हुआ।
- **आदिवासियों के छापामार संघर्ष से परेशान अंग्रेजी सरकार ने सन् 1778 में इनसे समझौता कर इनके क्षेत्र को दामिनी कोह क्षेत्र घोषित कर दिया।**

- **1857 ई. का विद्रोह**

कारण एवं परिणाम

विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारण

- **गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग के शासनकाल की एक महत्वपूर्ण घटना 1857 का विद्रोह थी।**

राजनीतिक कारण

- अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आये थे, परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने राज्य स्थापना तथा उसके विस्तार का कार्य आरम्भ किया। धीरे-धीरे **भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता का अपहरण होता गया और वे अपने राजनीतिक तथा उनसे उत्पन्न अधिकारों से वंचित होते गये।**
- जिसके फलस्वरूप उनमें बड़ा असंतोष फैला, जिसका विस्फोट 1857 ई. के विद्रोह के रूप में हुआ। इस क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे-

(1) डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति:-

- 1857 की क्रांति के लिए डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति काफी हद तक उत्तरदायी थी। **उसने विजय तथा पुत्र गोद लेने कई निषेध नीतियों द्वारा देशी राज्यों के अपहरण का एक कुचक्र चलाया।** जिसने समपूर्ण भारत के देशी नरेशों को आतंकित कर दिया और उनके हृदय में अस्थिरता तथा आशंका का बीजारोपण कर दिया।
- **लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत सिद्धान्त या हड़प-नीति को कठोरता पूर्वक अपनाकर देशी रियासतों के निःसन्तान राजाओं को उत्तराधिकार के लिए दत्तक-पुत्र लेने की आज्ञा नहीं दी** और सतारा (1848), नागपुर (1853), झांसी (1854), बरार (1854), संभलपुर, जैतपुर, बघाट, अदपुर आदि रियासतों को कथनी के ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला लिया। उसने 1856 ई. में अंग्रेजों के प्रति वफादार अदद रियासत को कुशासन के आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- उसने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतर दिया। उसने तंजौर और कर्नाटक के नवाबों की राजकीय उपाधियां छीन ली।
- मुग़ल बादशाह को नजराना देने के लिए अपमानित करना। सिक्कों पर नाम गुदवाने जैसी परम्परा को डलहौजी द्वारा समाप्त करना। आदि घटनाओं ने 1857 के विद्रोह को हवा दी।

(2) मुग़ल सम्राट के साथ दुर्व्यवहार :-

- अंग्रेजों ने भारतीय शासकों के साथ दुर्व्यवहार भी किया। उन्होंने मुग़ल सम्राट को नजराना देना व सम्मान प्रदर्शित करना बन्द कर दिया इतना ही नहीं **लॉर्ड डलहौजी ने मुग़ल सम्राट की उपाधि को समाप्त करने का निश्चय किया।**
- उसने बहादुरशाह के सबसे बड़े पुत्र मिर्जा जवाबख्त को युवराज स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और **बहादुरशाह से अपने पैतृक निवास स्थान लाल किले को खाली कर कुतुब में रहने के लिए कहा।**

(3) ब्रिटिश पदाधिकारियों के वक्तव्य-: डलहौजी की साम्राज्यदी नीति के साथ-साथ कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने ऐसे वक्तव्य दिये जिससे देशी नरेश बहुत आतंकित हो गये और अपने भावी अस्तित्व के सम्बन्ध मे पूर्ण रूप से निराश हो उठे।

(4) नाना साहब और रानी लक्ष्मी बाई का असन्तोष:-

- झांसी की रानी लक्ष्मी बाई तथा पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब अंग्रेजों के व्यवहार से बहुत नाराज थे।
- **अंग्रेजों ने झांसी के राजा-गंगाधर राव के दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकार से वंचित करके झांसी राज्य को कथनी के राज्य में शामिल कर लिया था।**
- इस अत्याचार को रानी लक्ष्मीबाई सहन न कर सकी और क्रान्ति के समय उसने विद्रोहियों का साथ दिया।

(5) अवध का विलय और नवाब के साथ अत्याचार:-

- अंग्रेजों ने बलपूर्वक लखनऊ पर अधिकार करके नबाव वाजिद अली शाह को निर्वासित कर दिया था और निर्लज्जतापूर्वक महलों को लूटा था।
- बेगमों के साथ बहुत अपमानजनक व्यवहार किया गया था। इससे अवध के सभी वर्ग के लोगों में बड़ा असन्तोष फैला और अवध क्रांतिकारियों का केन्द्र बन गया।

(6) प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था का विध्वंस :-

- अंग्रेजों की विजय के फलस्वरूप प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई थी।
- **ब्रिटिश शासन से पहले भारतवासी राज्य की नीति को पूरी तरह प्रभावित करते थे परन्तु अब वे इससे वंचित हो गये।** अब केवल अंग्रेज ही भारतीयों के भाग्य के निर्माता हो गये।

(7) अंग्रेजों के प्रति विदेशी भावना :-

- भारतीय जनता अंग्रेजों से इसलिए भी असन्तुष्ट थी क्योंकि वे समझते थे कि उनके शासक उनसे हजारों मील दूर रहते हैं। तुर्क, अफगान और मुग़ल भी भारत में विदेशी थे लेकिन वे भारत में ही बस गये थे और इस देश को उन्होंने अपना देश बना लिया था।
- जबकि अंग्रेजों ने ऐसा कोई काम नहीं किया था। अतः भारतीयों के हृदय और मस्तिष्क से अंग्रेजों के प्रति विदेशी की भावना नहीं निकल सकी थी।

(8) उच्च वर्ग में असंतोष:- देशी राज्यों के नष्ट हो जाने से न केवल उनके नरेशों का विनाश हुआ जबकि उच्च वर्ग के लोगों की स्थिति पर भी बड़ा घातक प्रहार हुआ।

प्रशासनिक कारण-

(1) नवीन शासन-पद्धति को समझने में कठिनाई होना :- भारतीय जिस शासन को सदियों से देखते आ रहे थे, वह समाप्त कर दिया गया था। नई शासन-पद्धति को समझने में उन्हें कठिनाई आ रही थी तथा, उसे वे शंका की दृष्टि से देखते थे।

(2) भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं से अलग रखने की नीति :-

- अंग्रेजों ने शुरू से ही भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं में शामिल न कर भेद-भाव पूर्ण नीति अपनाई। लॉर्ड कार्नवालिस का भारतीयों की कार्य कुशलता और ईमानदारी पर विश्वास नहीं था। अतः उसने **उच्च पदों पर भारतीयों के स्थान पर अंग्रेजों को नियुक्त कर दिया।**

- परिणामतः भारतीयों के लिए उच्च पदों के द्वार बन्द हो गये। यद्यपि 1833 ई. के कम्पनी के चार्टर एक्ट में यह आश्वासन दिया गया था कि धर्म, वंश, जन्म, रंग या अन्य किसी आधार पर सार्वजनिक सेवाओं में भर्ती के लिए कोई भेदभाव नहीं बरता जाएगा, परन्तु अंग्रेजों ने इस सिद्धान्त का पालन नहीं किया ।
- ***सैनिक और असैनिक सभी सार्वजनिक सेवाओं में उच्च पद यूरोपियन व्यक्तियों के लिए ही सुरक्षित रखे गये थे।*** सेना में एक भारतीय का सबसे बड़ा पद सूबेदार का होता था जिसे 60 या 70 रूपये प्रति माह वेतन मिलता था ।
- असैनिक सेवाओं में एक भारतीय को मिल सकने वाला सबसे बड़ा पद सदर अमीन का था जिसे 500/ - रूपये प्रति माह वेतन मिलता था । उच्च पद देना अंग्रेज अपना एकाधिकार समझते थे।

(3) ब्रिटिश न्याय व्यवस्था से भारतीयों में असंतोष :-

- ब्रिटिश न्याय प्रशासन एक भिन्न प्रशासनिक व्यवस्था का प्रतीक था । विधि प्रणाली और सम्पत्ति अधिकार पूरी तरह से नये थे। न्याय प्रणाली में अत्यधिक धन तथा समय नष्ट होता था और फिर भी निर्णय अनिश्चित था ।
- भारतीय इस न्याय व्यवस्था को पसन्द नहीं करते थे । अगर एक छोटा सा किसान भी किसी जमींदार की शिकायत करता था तो जमींदार को न्यायालय में जाना पड़ता था । इस प्रकार सम्मानित व्यक्ति अंग्रेजी न्यायालयों से असंतुष्ट थे ।

(4) दोषपूर्ण भू-राजस्व प्रणाली :-

- ***भू-राजस्व प्रणाली को नियमित करने के नाम पर अंग्रेजों ने अनेक जमींदारों के पट्टों की छानबीन की । जिन लोगों के पास जमीन के पट्टे नहीं मिले, उनकी जमीनें छीन ली गई ।***
- बम्बई के प्रसिद्ध इमाम आयोग ने लगभग बीस हजार जागीरें जप्त कर ली थी । लॉर्ड बैन्टिक ने तो माफी की भूमि भी छीन ली । इस प्रकार कुलीन वर्ग को अपनी सम्पत्ति व आय से हाथ धोना पड़ा।
- ***भूमि अपहरण की नीति के कारण तालुकेदारों में बड़ा असंतोष फैला और क्रांति में इन लोगों ने सक्रिय भाग लिया ।***
- किसानों के कल्याण एवं लाभ के नाम पर स्थाई बन्दोबस्त, रैयतवाड़ी व महलवाड़ी प्रणाली लागू की गई थी और हर बार किसानों से पहले की अपेक्षा अधिक लगान वसूल किया गया, जिसके कारण किसान लगातार निर्धन होकर साधारण मजदूर बनता गया ।
- अंग्रेजों की लगान-नीति के विरुद्ध इतना प्रबल विरोध था कि अनेक स्थानों पर बिना सेना की सहायता से लगान जमा नहीं किया जा सकता था।

(5) शक्तिशाली ब्रिटिश अधिकारी वर्ग का विकास :-

- ***भारत में कम्पनी शासन की सर्वोच्चता स्थापित होने के साथ ही प्रशासन में एक शक्तिशाली ब्रिटिश अधिकारी वर्ग का उदय हुआ ।***
- यह वर्ग भारतीयों से मिलना पसन्द नहीं करता था और हर प्रकार से उन्हें अपमानित करता था । अंग्रेजों के इस प्रजाति भेदभाव की नीति से भारतीय क्रुद्ध हो उठे और उनका यह क्रोध 1857 ई. के विद्रोह के रूप में व्यक्त हुआ।

(6) शिक्षित भारतीयों में ब्रिटिश शासन से असंतोषः-

- शिक्षित भारतीयों को यह आशा थी कि शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ उन्हें राजनीतिक प्रशासनिक अधिकार प्राप्त हो जायेंगे ।
- लेकिन अंग्रेजों की ऐसी कोई इच्छा नहीं थी । शिक्षित भारतीयों को प्रशासन में कहीं शामिल नहीं किया गया था।

आर्थिक कारण

- भारत में अंग्रेजी शासन का मूल आधार भारत का आर्थिक शोषण था । अंग्रेजों ने भारतीयों का जितना राजनीतिक शोषण किया, उससे भी बढ़कर उन्होंने आर्थिक शोषण किया। चूंकि अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आए थे ।
- अतः शुरू से ही उनका लक्ष्य धन कमाना था। अपने इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए उन्होंने नैतिक और अनैतिक सभी प्रकार के साधनों का प्रयोग किया । 1857 ई. के विद्रोह के आर्थिक कारण निम्नलिखित थे-

(1) धन का विदेश गमन :-

- अंग्रेजों के पूर्व जिन लोगों ने भारत पर आक्रमण किया था, और यहाँ अपना राज्य स्थापित किया था । उन्होंने भारत को ही अपना स्थायी निवास बना लिया था ।
- अतएव भारत की सम्पत्ति भारत में ही रह जाती थी, लेकिन अंग्रेजों ने कभी भी भारत को अपना स्थायी घर नहीं बनाया। इस प्रकार भारत में अनेक तरीकों से धन कमाकर के अन्त में वे अपने देश ले जाते थे । अपने देश से धन का यह गमन भारतीयों को सहन नहीं था ।

(2) भारतीय व्यापार एवं उद्योगों का विध्वंस :-

- ***19 वीं शताब्दी में इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति हो चुकी थी इसलिए इंग्लैंड को भारत से कच्चा माल ले जाने और अपने कारखानों में तैयार माल को बेचने के लिए भारतीय बाजार की आवश्यकता थी ।***
- ***इन दोनों जरूरतों को पूरा करने के लिए इंग्लैंड ने भारतीय उद्योग धन्धों को नष्ट कर दिया ।*** एक ग्रामीण उद्योग के बाद दूसरा -ग्रामीण उद्योग नष्ट होता गया और भारत ब्रिटेन का आर्थिक उपकरण बन गया ।
- चूंकि अंग्रेजों ने भारतीय व्यापार, वाणिज्य और कुटीर उद्योग पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था । अतः भारतीयों में गरीबी तेजी से बढ़ने लगी।

(3) किसानों की दशा दयनीय होना :-

- ***अंग्रेजों ने किसानों की दशा सुधारने के नाम पर स्थायी बन्दोबस्त रैयतवाड़ी व महलवाड़ी प्रणाली लागू की लेकिन इन सब में किसानों से बहुत ज्यादा भूमिकर वसूल किया गया जो किसान समय पर भूमि कर नहीं चुका पाते थे ।***

- जुलाई 1857 में हैवलाक ने कानपुर पर आक्रमण कर दिया और घोर संघर्ष के बाद कानपुर पर अधिकार कर लिया।
- **नवम्बर 1857 में ग्वालियर के 20,000 क्रांतिकारी सैनिकों ने तात्या टोपे के नेतृत्व में कानपुर पर आक्रमण कर दिया** और वहाँ पर सेनापति विंडहम को पराजित करके 28 नवम्बर को कानपुर पर पुनः प्रभुत्व स्थापित कर लिया ।
- दुर्भाग्यश दिसम्बर 1857 को कैम्पवेल ने क्रांतिकारियों को बुरी तरह पराजित किया और कानपुर पुन : अंग्रेजों के हाथ में आ गया | नाना साहब वहां से नेपाल चले गये ।

झांसी

- **झांसी में विद्रोह का प्रारम्भ 5 जून 1857 को हुआ। रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने बुन्देलखण्ड तथा उसके निकटवर्ती प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया |**
- **बुन्देलखण्ड में विद्रोह के दमन का कार्य ह्यूरोज नामक सेनापति को सौंपा गया था |** उसने 23 मार्च 1857 को झांसी का घेरा डाल दिया ।
- एक सप्ताह तक युद्ध चलता रहा लक्ष्मीबाई के मोर्चा संभालने वालों में सिर्फ ब्राह्मण एवं क्षत्रिय ही नहीं थे कोली, काछी और तेली भी थे ये महाराष्ट्रीय और बुन्देलखण्डी थे ये पठान तथा अन्य मुसलमान थे ।
- पुरूषों के साथ हर मोर्चे पर महिलाएं भी थी । झांसी की सुरक्षा असंभव समझकर लक्ष्मीबाई 4 अप्रैल 1858 को अपने दत्तक पुत्र दामोदर को पीठ से बांधकर एक रक्षक दल के साथ शत्रु सेना को चीरती हुई कालपी पहुँची ।
- तात्या टोपे, बांदा के नबाव बाणपुर तथा शाहगढ़ के राजा व अन्य क्रांतिकारी नेता भी कालपी विद्यमान थे । यहाँ ह्यूरोज के साथ भयंकर युद्ध हुआ जिसमें विजय अंग्रेजों को मिली।
- मई 1858 को रानी ग्वालियर पहुँची सिंधिया अंग्रेजों का समर्थक था किन्तु उसकी सेना विद्रोहियों के साथ हो गई । जिसकी सहायता से रानी ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया और ग्वालियर की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुई ।

बिहार

- **बिहार में जगदीशपुर के जमींदार कुंवरसिंह ने विद्रोह का नेतृत्व किया था |** उस समय उनकी आयु 70 साल थी | कुंवरसिंह को अंग्रेजों ने दिवालिएपन के कगार पर पहुँचा दिया था ।
- यद्यपि उन्होंने खुद किसी विद्रोह की योजना नहीं बनाई थी। लेकिन विद्रोही सैनिकों की टुकड़ी दीनापुर से आरा पहुँचने पर कुंवरसिंह उनके साथ मिल गये । जुलाई 1857 में उन्होंने आरा पर अधिकार कर लिया |
- मार्च 1858 में उन्होंने आजमगढ़ पर अधिकार जमाया । यह उनकी सबसे बड़ी सफलता थी | 22 अप्रैल 1858 ई को उन्होंने अपनी जागीर जगदीशपुर पर पुनः अधिकार कर लिया ।
- अन्त में उनकी जागीर में ही अंग्रेजों ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया और वह संघर्ष करते हुए मारे गये । उनकी मृत्यु के समय जगदीशपुर पर आजादी का झण्डा फहरा रहा था।
- **सम्पूर्ण भारत के विद्रोह में कुंवरसिंह ही एक ऐसे वीर थे जिन्होंने अंग्रेजों को अनेक बार हराया |**

राजपूताना

- **राजपूताना में 28 मई 1857 को नसीराबाद छावनी में तथा 3 जून 1857 को नीमच में विद्रोह हुआ लेकिन विद्रोह का मुख्य केन्द्र कोटा और आउवा थे ।**
- कोटा में विद्रोह का नेतृत्व मेहराब खां और लाला जयदयाल ने किया । **कोटा में क्रांति का महत्व अपेक्षाकृत ज्यादा माना जाता है। क्योंकि लगभग छः महीनों तक कोटा पर क्रांतिकारियों का अधिकार रहा ।**
- समस्त जनता क्रांति की समर्थक बन गई थी । विद्रोहियों का लक्ष्य मुख्यतः सरकारी सम्पत्ति और सरकारी बंगले को नुकसान पहुँचाना था ।
- मेहराब खाँ और जयदयाल के नेतृत्व में छः महीने तक फौज ने इच्छानुसार शासन चलाया | अंग्रेजों के अनेक समर्थकों को तोपों के मुंह पर बांधकर उड़ा दिया गया ।
- **अंग्रेजों को इस विद्रोह को कुचलने के लिए विशेष सेना भेजनी पड़ी | महाराव की स्वामी भक्त सेना करौली की सेना, गोटेपुर की फौज ने भी इस ब्रिटिश सेना का सहयोग किया।**
- लम्बे संघर्ष के बाद 30 मार्च 1858 को कोटा पर पुनः अंग्रेजों का अधिकार हो गया| मेहराव खां और लाला जयदयाल पर मुकदमा चलाने का दिखावा कर उन्हें फांसी पर लटका दिया गया ।
- **जोधपुर के एरनपुरा में हुए विद्रोह में आउवा के ठाकुर कुशालसिंह चम्पावत तथा मेवाड़ एवं मारवाड़ के कुछ जागीरदार शामिल हुए |** जोधपुर के शासक द्वारा किलेदार अनाड़सिंह के नेतृत्व में भेजी गई सेना को क्रांतिकारियों ने पराजित कर दिया ।
- 18 सितम्बर 1857 को क्रांतिकारियों व जोधपुर के पोलिटिकल एजेन्ट कैप्टन मैंसन/(मोसन) एवं ए.जी.जी लारेंस के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना में युद्ध हुआ| जिसमें ए.जी.जी. की सेना बुरी तरह परास्त हुई ।
- आउवा के क्रांतिकारी नेताओं का संघर्ष दिल्ली से था और मारवाड़ की जनता की सद्भावना उनके साथ थी।
- 10 अक्टूबर 1857 को जोधपुर लीजियन के फौजी तथा कुशालसिंह के कई सहयोगी ठाकुर दिल्ली की ओर रवाना हुए ।
- दिल्ली जाने का उद्देश्य यह था कि वे बहादुरशाह जफर का फरमान प्राप्त कर उसकी सैनिक सहायता से मारवाड़ तथा मेवाड़ को अंग्रेजी आधिपत्य से मुक्त कराना चाहते थे ।

पंजाब

- पंजाब के सिख राजाओं के विद्रोह में शामिल न होने के बारे में विद्वानों में एक मत नहीं है । वैसे ज्यादातर सिक्ख राजाओं ने क्रांतिकारियों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाई थी |
- **पंजाब के इस विद्रोह में भाग न लेने का एक मुख्य कारण पंजाबी सैनिकों की सहायता से नई सेनाओं का गठन होना था |**

अध्याय – 3

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन - विभिन्न अवस्थाएं

- **राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण :**

(1) ब्रिटिश राजनीतिक आर्थिक सामाजिक नीतियाँ

- ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने विभिन्न राज्यों को जीतकर उनकी अलग -अलग पहचान समाप्त कर वहाँ एक समान सामाजिक -राजनीतिक संरचना स्थापित की।
- इसी क्रम में भारत का एक गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया तो साथ ही, एक समान न्यायिक प्रणाली लागू की गई। इस तरह विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले भारतीय एक सूत्र में बचे।
- वस्तुतः ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया । दरअसल एक साझे एकजुट की उपस्थिति एवं पहचान ने विभिन्न क्षेत्र के भारतीयों को ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ । ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
- **ब्रिटिश शासन द्वारा विकसित संचार प्रणाली जैसे-रेलवे सड़क डाकतार व्यवस्थाने विभिन्न क्षेत्र के लोगों के आवागमन को आसान बनाकर आपसी संपर्क को बढ़ावा दिया ।**
- **फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार निर्मित हुआ। वस्तुतः रेलवे जैसे साधनों के विकास से देश** के विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों एवं लोगों का आपसी संपर्क आसान हुआ | इससे राजनीतिक विचारों के आदान प्रदान की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला।
- ब्रिटिश शिक्षा नीति एवं पश्चिमी चिंतन ने भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया । फलत :एक भारतीय मध्यवर्ग का उदय हुआ जो ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के स्वरूप को समझ सका और शोषण के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर एककिया एवं मध्यवर्ग होकर बेंथम मिल, रूसो, जॉन लॉक, मोटेस्क्यू डार्विन के विचारों से परिचित हुआ और जनतांत्रिक अधिकारों की मांग करने लगा।
- इस तरह आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यवर्ग ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके उसके औपनिवेशिक स्वरूप को उजागर कर दिया और शोषण से मुक्ति के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना कर उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया । इसी संदर्भ में यह कहा गया कि "भारतीयों ने पश्चिमी हथौड़े से पश्चिमी बेडियों को तोड़ डाला"।

(2) सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन :-

- 19 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछुत और धार्मिक आडंबरों पर चोट कर मानव की एकता पर बल दिया तो साथ ही, प्राचीन गौरवपूर्ण परंपरा को उद्घटित कर भारतीयों के अंदर हीनता की भावना को दूर कर आत्मविश्वास और सम्मान की भावना भरी।
- इसी तरह, सुधारकों ने 'स्वराज' एवं 'स्वदेशी' पर बल दिया और विदेशी शासन को किसी भी दृष्टि से सुखदायी नहीं बताया तथा इससे मुक्त होने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इसी क्रम में, भारत भारतीयों के लिए नारा दिया गया। फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(3) पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन :-

- पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन से विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को उनके विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। साथ ही, आधुनिक विचारों जैसे -स्वशासन, लोकतंत्र नागरिक अधिकार आदि को प्रचारित कर लोगों को जागरूक बनाया। इसी क्रम में, राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(4) लिटन और कर्जन की नीतियाँ :-

- लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों को असंतुष्ट किया । लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम लाकर समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया । साथ ही, सिविल सेवा परीक्षा में उम्र सीमा में कमी कर भारतीयोंको इससे बाहर करने की योजना बनायी।
- इतना ही नहीं, अकाल के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन कर ब्रिटेन के शासक का सम्मान करने का कार्य किया और भारतीय धन का दुरुपयोग किया और लिख के भारतीय विरोधी नीति से असंतुष्ट होकर लोग एकत्रित हुए।
- **कर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर शिक्षण संस्थान की स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया और कलकत्ता नगर निगम अधिनियम लाकर सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया।** तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की | इसी क्रम में, बंगाल विभाजन का विरोध बंगाल बाहर भी होने लगा।
- वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुआ । इस तरह ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी नीतियों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं संदर्भों में यह कहा गयो कि 'कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं।

(5) रिपन की नीतियाँ :-

- **वायसराय रिपन के समय 1883 में 'इल्बर्ट बिल' विवाद सामने आया ।** जिसने भारतीयों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया । वस्तुतः इल्बर्ट **बिल के तहत भारतीयों को भी यूरोपियों का मुकदमा सुनने का अधिकार दिया** गया।
- किंतु **अंग्रेजों ने संगठित होकर इस बिल का विरोध किया जिसे खेत विद्रोह के नाम से जाना जाता** है। अतःरिपन को यह बिल वापस लेना पड़ा। इस बिल के विवाद से स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश अभी भी नस्लवादी नीति पर चल रहे हैं और संगठित होकर विरोध करने से अपनी मांगो को मनवाया जा सकता हैं।

कांग्रेस की स्थापना :

- इसका आरंभिक नाम इंडियन नेशनल यूनियन रखा गया और प्रथम सम्मेलन पुणे में आयोजित करने की घोषणा की गई ।
- किंतु वहां प्लेग फैलने के कारण यह सम्मेलन बाम्बे में हुआ वहां प्लेग और दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इंडियन नेशनल कांग्रेस कर दिया गया।
- कांग्रेस का संस्थापक एक ब्रिटिश सेवानिवृत अधिकारी A.O. ह्युम था। इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे। इसमें 72 लोग सदस्य बने।
- **कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुदीन तैय्यब थे जो 1887 में मद्रास अधिवेशन में अध्यक्ष बने।**

कांग्रेस की स्थापना के संबंध में विवाद :

(i) सेफ्टी वाल्व सिद्धांत सुरक्षा कपाट सिद्धांत

- **इस सिद्धांत का प्रतिपादन लाला लाजपत राय ने किया।** उन्होंने ह्युम के जीवनी लेखक विलियम वेडरबर्न को आधार बनाकर अपनी अवधारणा 'यंग इंडिया' लेखों में प्रकाशित किया और कहा कि कांग्रेस लार्ड डफरिन के मस्तिष्क की उपज है।
- वस्तुतः भारतीय असंतोष को पहले ही जान लेने के लिए इस संस्था का गठन किया ।दरअसल लाला लाजपत राय ने कांग्रेस की यह आलोचना उसके उदारवादी नेतृत्व पर प्रहार करने के क्रम में की।

(ii) तड़ित चालक सिद्धांत

- **गोपाल कृष्ण गोखले ने इस सिद्धांत के तहत कांग्रेस की स्थापना को स्पष्ट करते हुए कहा कि सरकारी असंतोष से बचने के लिए भारतीय नेताओं ने ह्यूम का प्रयोग किया।**
- वस्तुतः कांग्रेस का संस्थापक यदि इस समय कोई अंग्रेज नहीं होता, तो आरंभ में ही यह संस्था ब्रिटिश दमन का शिकार हो सकती थी। अतः **ब्रिटिश दमन से बचने के लिए भारतीयों ने ह्यूम का नेतृत्व स्वीकार किया जो एक ब्रिटिश अधिकारी थे।**

उदारवादी आंदोलन

- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की आरंभिक राजनीति राष्ट्रीय आंदोलन में उदारवादी या नरमपंथी राजनीति के नाम जानी जाती है।**
- इसके प्रमुख नेता दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले, जे .घोषाल, बदरुद्दीन तैय्यब महादेव गोविन्द रानाडे, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी मदनमोहन मालवीय आदि थे।

विचारधारा

- उदारवादी कांग्रेसी नेता ब्रिटिश न्यायप्रियता में विश्वास करते थे। अर्थात् ब्रिटिश संसद एवं जनता में इनका अटूट विश्वास था । अतः यह संवैधानिक मार्गो पर चलकर अधिकार प्राप्त करने पर बल देते थे।
- उदारवादियों का मानना था कि भारतीय जनता अशिक्षित है। अत :इसे आंदोलन शामिल नहीं करना चाहिए। इस तरह, भारत की आम जनता में इनका विश्वास नहीं था।
- **उदारवादियों का मानना था कि ब्रिटिश शासन भारत में एक वरदान है और यह भारत को धीरे-धीरे लोकतांत्रिक शासन की ओर ले जाएगा।** इसलिए उन्होनें कभी ब्रिटिश साम्राज्य से अलग होने की बात नहीं की। बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत स्वशासन की प्राप्ति पर बल दिया।
- उदारवादियों का मानना था कि इंग्लैंड में मौजूद ब्रिटिश रूल बेहद प्रगतिशील है। वहाँ संसदीय शासन प्रणाली है जहाँ जनता के अधिकार सुरक्षित हैं नागरिकों को अपनी मांग रखने का अधिकार है, प्रेस की स्वतंत्रता है, आर्थिक प्रशासनिक स्तर पर नागरिकों के साथ कोई भेदभाव नहीं है, वैज्ञानिक तकनीकी शिक्षा मौजूद है।
- अतः इंग्लैंड का आर्थिक औद्योगिक विकास हो रहा है। इससे वहाँ के लोगों के जीवन में समृद्धि आ रही है। इस तरह इंग्लैंड में स्थापित ब्रिटिश रुल प्रगतिशील है, और यह लोक-कल्याण स्वरूप से युक्त है। जबकि भारत में भी ब्रिटिश नियंत्रण है।
- यहाँ ब्रिटिश अधिकारियों के होते हुए भी ब्रिटिश रूल की स्थापना नहीं की गयी है, यहाँ लोकतांत्रिक शासन नहीं है, प्रतिनिधि संस्थानों में भारतीयों ककी पर्याप्त भागीदारी नहीं है। भारतीयों को नागरिक अधिकारों से वंचित रखा गया है। प्रेस पर सरकारी नियंत्रण है ।
- प्रशासनिक सेवाओं में भारतीय नागरिकों के साथ भेदभाव किया जाता है। वैज्ञानिक - तकनीकी शिक्षा का प्रसार नहीं है। ब्रिटिश नीतियों की वजह से भारत में कृषि का पिछड़ापन है।
- हस्तशिल्प उद्योगों का पतन हो गया है। अतः गरीबी, ऋणग्रस्तता और अकाल की बारंबारता मौजूद है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था एक ऋणग्रस्त एवं पिछड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में जानी जाती है। वस्तुतः इन सबका कारण भारत में अंग्रेजों द्वारा स्थापित अनब्रिटिश रूल है।

कार्यपद्धति :

- उदारवादी नेता ब्रिटिश जनमत को प्रभावित कर क्रमिक सुधारों पर बल देते थे। अतः उन्होंने लंदन में प्रचार कार्य पर बल दिया।
- उदारवादी नेता प्राथना पत्र, स्मरण -पत्र तथा विभिन्न लेखों के माध्यम से अपनी समस्याओं को प्रस्तुत कर समाधान की मांग करते थे। वस्तुतः उदारवादी संवैधानिक तरीके से अपनी मांग रखकर रक्तहीन संघर्ष में विश्वास करते थे।

मांगे

- भारतीय विधायिका में भारतीयों की संख्या बढ़ाई जाए।
- कनाडा और ऑस्ट्रेलिया के समान ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन भारत को स्वशासन दिया जाए।
- भेद-भाव मूलक शस्त्र अधिनियम की समाप्ति हो तथा सैन्य व्यय में कटौती की जाए एवं धन की निकासी रोका जाए।

- उदारवादी नेता बंगाल विभाजन केविरोध को केवल बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे। जबकि उग्रवादी इसे बंगाल के बाहर भी प्रसारित करना चाहते थे।
- इसी तरह, उदारवादी बहिष्कार कार्यक्रम को केवल विदेशी वस्त्रों एवं मदिरा तक सीमित रखना चाहते थे जबकि उग्रवादी ब्रिटिश से जुड़ी प्रत्येक संस्थाओं के बहिष्कार की बात कर रहे थे। अर्थात् वे स्कूल, अदालत, उपाधियों आदि के बहिष्कार बल दे रहे थे। इसी क्रम में 1907 अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष के में चुनाव के सूरत मुद्दे पर मतभेद बढ़ा और कांग्रेस का विभाजन हुआ। वस्तुतः उदारवादी रास बिहारी घोष को अध्यक्ष बनाना चाहते थे जबकि उग्रवादी तिलक या लाला लाजपत राय को अध्यक्ष बनाना चाहते थे। अंततः रास बिहारी बोस अध्यक्ष बने और उग्रवादी कांग्रेस से बाहर कर दिए गए।

<u>बंगाल विभाजन का रद्द होना :</u>

- बंगाल में क्रांतिकारी घटनाओं के बढ़ने से चित्रित होकर ब्रिटिश सरकार ने 1911 में बंगाल विभाजन रद्द करने की घोषणा की। इससे पूर्वी बंगाल के मुस्लिम समुदाय को आघात पहुंचा।
- अतः उन्हें संतुष्ट करने के लिएसरकार ने भारत की राजधानी कलकत्ता से बदलकर दिल्ली घोषित कीजो पहले मुस्लिम शासन का केन्द्र था। इसी के साथ सरकार ने बिहार एवं उड़ीसा को बंगाल से अलग कर नवीन प्रांत बना दिया।

• <u>क्रांतिकारी आंदोलन</u>

<u>उदय के कारण :</u>

1. नरमपंथी राजनीति अव्यवहारिक एवं गरमपंथी (उग्रवादी) राजनीति असफल हो रही थी। ऐसे लोगों का बम और पिस्तौल की राजनीति विश्वास जगा।
2. सरकार की दमनात्मक कार्यवाही ने युवक, युवतियों को विद्रोही बनाया और वे 'बल को बल से रोकने' के दर्शन में विश्वास करने लगे।
3. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से क्रांतिकारी गतिविधियों को बढ़ावा मिला । जैसे युगान्तर बंदी जीवन, साध्य में लिखे गए लेख और गीतों से लोगों में व्यक्तिगत वीरता और बलिदान की भावना पैदा होती रही। ***बंदी जीवन की रचना शचिन्द्रनाथ सान्याल ने की। इस पुस्तक को क्रांतिकारियों की बाइबिल कहा जाता है ।***
4. आयरलैंड के क्रांतिकारी एवं रूस के शून्यवादी जैसे क्रांतिकारी समूहों से प्रेरित होकर भारत में भी क्रांतिकारी आंदोलन को बढ़ावा मिला।
5. समाजवादी विचारधारा के विकास ने भी क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रेरित किया । वस्तुतः 1917 की रूसी साम्यवादी क्रांति की सफलता से प्रेरित होकर भारत में भी युवा वर्ग उत्साहित हुआ और क्रांति के माध्यम से अपने अधिकार प्राप्ति के लिए आगे बढ़ा।
6. गाँधी के असहयोग आंदोलन की अचानक वापसी से युवा वर्ग को निराशा हुई। अब उसे ब्रिटिश शासन के विरोध का कोई विकल्प नजर नहीं आया। अतः एकबार फिर बम और पिस्तौल की राजनीति में लोगों का विश्वास जागा।

<u>कार्यक्रम :</u>

1. अलोकप्रिय ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या करना अर्थात् जिन ब्रिटिश अधिकारियों ने भारतीयों के प्रति दमनात्मक कार्यवाही की और दुर्व्यवहार किया, उनकी हत्या करना।
2. बम बनाना एवं विदेशों से हथियार प्राप्त करना।
3. गुप्त समीतियों की स्थापना कर सशस्त्र कार्यवाही करना।
4. स्वदेशी डकैती डालना।
5. क्रांतिकारी विचारों के प्रसार हेतु पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशनकरना। जैसे- वीरेन्द्र कुमार चटोपाध्याय ने'तलवार' नामक पत्र का संपादन किया ।
6. सैनिक शिक्षा और धार्मिक कार्यक्रम द्वारा लोगों में राष्ट्रवादी भावना पैदा करना और उन्हें क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए तैयार करना ।

<u>क्रांतिकारी विचारधारा :-</u>

(i) 19 वीं सदी के क्रांतिकारी केवल विदेशी शासन से मुक्ति चाहते थे। अर्थात् राष्ट्रवादी थे किंतु 10 वीं सदी में 1920 के पश्चात् ***क्रांतिकारी समाजवादी विचारधारा से युक्त हो गए जिनमे प्रमुख थे भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद ।***

(ii) इन क्रांतिकारियों ने स्पष्ट किया कि हमे उस व्यवस्था को समाप्त करना है जिसमें लोगों का शोषण होता है अर्थात् राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ समाजवादी शासन की स्थापना का लक्ष्म घोषित किया । इसी क्रम में रेलवे जहाज निर्माण इकाईयों जैसे परिवहन के साधन एवं लौह उद्योग जैसी इकाइयों के राष्ट्रीयकरण पर बल दिया।

(iii) क्रांतिकारियों ने कहा कि भारत में संघर्ष तब तक चलता रहेगा जब तक मुट्ठी भर शोषक अपने लाभ के लिए जनता के श्रम का शोषण करते रहेंगे। इस बात का कोई महत्व नहीं कि शोषक अंग्रेज पूँजीपति है या भारतीय अथवा दोनो का गठबंधन। इस तरह क्रांतिकारियों ने यह स्पष्ट किया कि बम और पिस्तौल की राजनीति में उनका विश्वास नहीं है। उनका लक्ष्य तो किसान एवं मजदूरों के शासन की स्थापना करना है

(iv) रामप्रसाद बिस्मिल ने अपने हिरासत की अवधि के दौरान कहा कि युवा पिस्तौल का साथ छोड़ दे और जनता के साथ खुला आंदोलन चलाए तथा सभी राजनीतिक दल कांग्रेस के नेतृत्व में एकजुट हो। उन्होंने समाजवाद में आस्था प्रकट करते हुए कहा कि प्रकृति की संपदा पर सबका अधिकार है।

(v) भगत सिंह भी अपने चिंतन में समाजवाद के समर्थक थे। उनके अनुसार क्रांति का तात्पर्य जनता द्वारा जनता के लिए परिवर्तन करना था। उन्होंने कहा कि क्रांति के लिए रक्तरंजित संघर्ष आवश्यक नहीं है। व्यक्तिगत दुश्मनी के लिए भी उसमें कोई जगह नहीं है यह बम और पिस्तौल की उपासना नहीं

अध्याय – 3

प्रमुख राजवंश

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से ।।वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया।
- जोधपुर के **बाँक शिलालेख** के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था।
- 8वीं-।0वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली **महाभारत शैली / गुर्जर-प्रतिहार शैली** प्रचलित थी।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में **गुर्जर-प्रतिहार** के नाम से जाना गया।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था। गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार **गुर्जर प्रतिहार** कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी **"भीनमाल (जालौर)"** थी। बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' के **सर्वप्रथम** उल्लेख से मिलती है।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डौर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में **कु-ची-लो (गुर्जर)** देश का उल्लेख करता है।
- जिसकी राजधानी **पि-लो-मो-लो** (भीनमाल) में थी। अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को **'जुर्ज'** भी कहा है।
- **अल मसूदी प्रतिहारों** को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को **'बोरा'** कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्रजी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुर्जर कहलाए।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है। डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं। जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को **ईरानी मूल** के बताते हैं।
- **मिस्टर जैक्सन** ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था। **कनिंघम** ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है।
- भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था।
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई। **मुहणौत नैणसी** (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी - मण्डौर व भीनमाल।
- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी।

भीनमाल शाखा (जालौर)
गुर्जर प्रतिहार वंश

- **गुर्जर प्रतिहार वंश** – प्रतिहार शब्द वास्तव में पदनाम है जिसका अर्थ द्वारपाल है। अभिलेखिक रूप से गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में हुआ है।
- उत्तर-पश्चिम भारत में गुर्जर प्रतिहार वंश का शासन छठी से बारहवीं शताब्दी तक रहा।
- इतिहासकार रमेशचन्द्र मजूमदार ने गुर्जर प्रतिहार को छठी से बारहवीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का काम करने वाला बताया है।
- गुर्जरात्रा (गुर्जर प्रदेश) के स्वामी होने के कारण प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है।
- नीलगुण्ड, राधनपुर, देवली तथा करहाड़ के अभिलेखों में इन्हें गुर्जर कहा गया।
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट को रामका प्रतिहार तथा विशुद्ध क्षत्रिय कहा गया है।
- अरब यात्रियों ने इनके लिए 'जुर्ज' शब्द का प्रयोग किया है। अलमसूदी ने गुर्जर प्रतिहारों को 'अल गुजर' तथा राजा को 'बोरा' कहा है।
- राजशेखर ने अपने ग्रंथ 'विद्धशालभंजिका' में प्रतिहार महेन्द्रपाल को रघुकुल तिलक (सूर्यवंशी) लिखा है।
- मुहणोत नैणसी ने प्रतिहारों की 26 शाखाओं का उल्लेख किया है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने ग्रंथ 'सियूकी' में गुर्जर राज्य को 'कु-चे-लो'(गुर्जर)तथा इसकी राजधानी 'पीलोमोलो' (भीनमाल) बताया है।
- कवि पम्प ने अपने ग्रंथ पम्पभारत' में कन्नौज शासक महीपाल को गुर्जर राजा बताया है।
- कैनेडी ने प्रतिहारों को ईरानी मूल का बताया है।
- उद्योतन सूरी ने अपने ग्रंथ 'कुवलयमाला' में गुर्जर शब्द का प्रयोग एक जाति विशेष के रूप में किया है।
- डॉ. भंडारकर ने प्रतिहारा को विदेशी गुर्जर जाति की संतान माना है।

मण्डोर के प्रतिहार

- मण्डोर के प्रतिहार गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखाओं में से सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन मण्डोर के प्रतिहार थे।
- मण्डोर के प्रतिहार स्वयं को 'हरिश्चन्द्र नामक ब्राह्मण' (रोहिलद्धि)का वंशज बताते हैं।

- हरिश्चन्द्र के दो पत्नियां थी- एक ब्राह्मणी और दूसरी क्षत्राणी भद्रा। उसकी ब्राह्मणी पत्नी से उत्पन्न संतान प्रतिहार ब्राह्मण तथा क्षत्राणी भद्रा से उत्पन्न संतान क्षत्रिय प्रतिहार कहलाये।
- हरिश्चन्द्र की रानी भद्रा से चार पुत्र- भोगभट्ट, कदक, रज्जिल और दद्द उत्पन्न हुए।
- इन चारों ने मिलकर मण्डोर को जीता तथा यहाँ गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना की।
- मण्डोर के प्रतिहारों की वंशावली हरिश्चन्द्र के तीसरे पुत्र रज्जिल से प्रारंभ होती है।

रज्जिल

- हरिश्चन्द्र के चार पुत्रों में से रज्जिल मण्डोर का शासक बना।

नागभट्ट प्रथम

- यह रज्जिल का पौत्र था।
- इसने मेड़ता को अपनी राजधानी बनाया।

शीलुक

- शीलुक ने वल्ल मण्डल के शासक भाटी देवराज को हराकर अपने राज्य की सीमा का वल्ल तक विस्तार किया।

कक्क

- यह शीलुक का पौत्र था।
- इसने मुंगेर के युद्ध में पाल वंश के शासक धर्मपाल को पराजित किया।
- इसके दो पुत्र थे- बाउक तथा कक्कुक।

बाउक

- बाउक एक प्रतापी शासक था जिसने अपने शत्रु नन्दवल्लभ को मारकर भूअकूप पर अधिकार कर लिया।
- इसका 837 ई. का 'मण्डोर (जोधपुर) का शिलालेख' प्राप्त हुआ है जिसमें बाउक ने अपने वंश का वर्णन अंकित करवाया।
- बाउक ने मयूर नामक राजा को पराजित किया था।

कक्कुक

- बाउक के बाद उसका भाई कक्कुक मण्डोर का शासक बना।
- घटियाला से प्राप्त दो शिलालेख कक्कुक के समय के हैं।
- इसने रोहिंसकूप (घटियाला- वर्तमान फलौदी) के निकट गावों में बाजार बनवाये तथा व्यापार में वृद्धि की।
- कक्कुक के द्वारा घटियाला तथा मण्डोर में जयस्तम्भ भी स्थापित करवाये गये।
- कालान्तर में मण्डोर के आस-पास के क्षेत्र पर चौहानों का अधिकार हो गया लेकिन मण्डोर प्रतिहारों की इन्दा शाखा के अधीन रहा।
- इन्दा प्रतिहारों ने राठौड़ चूँडा के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर मण्डोर का क्षेत्र राठौड़ों को दहेज में दे दिया।
- इस घटना के साथ ही मण्डोर प्रतिहारों का राजनीतिकी इतिहास समाप्त हो गया।

भड़ौंच के गुर्जर प्रतिहार

दद्द प्रथम

- भड़ौंच के गुर्जर राज्य का संस्थापक हरिश्चन्द्र का पुत्र दद्द प्रथम था।
- इस शाखा के 629 ई. से 641 ई. के कुछ दानपत्र मिले हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि नान्दीपुर इन गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी थी।
- दद्द प्रथम ने नागवंशियों तथा वनवासी राजा निरिहुलक के राज्य पर अधिकार किया था।

जयभट्ट प्रथम

- जयभट्ट प्रथम दद्द प्रथम का पुत्र था। इसकी उपाधि 'वीतराग' थी।
- जयभट्ट प्रथम हर्षवर्धन के समकालीन था।
- संखेड़ा दानपत्रों से उसकी विजयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- उमेता, ललुआ तथा बेगुमरा शिलालेखों के अनुसार जयभट्ट प्रथम ने वल्मी की सेना को काठियावाड़ प्रान्त में पराजित किया था।
- इसने कलचुरियों को भी पराजित किया था।

दद्द द्वितीय

- जयभट्ट प्रथम के बाद उसका पुत्र दद्द द्वितीय शासक बना, जिसकी उपाधि 'महाराजा प्रशांतराग' थी।
- बड़ौदा के संखेड़ा नामक स्थान से दद्द द्वितीय के दानपत्र प्राप्त हुए हैं जिनकी भाषा संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी है।
- दद्द द्वितीय के समय हर्षवर्धन ने वल्लभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को पराजित किया।
- इस समय ध्रुवसेन द्वितीय ने दद्द द्वितीय के दरबार में शरण ली, जिसके बाद दद्द द्वितीय ने हर्षवर्धन से उसका राज्य वापस दिला दिया।
- इसका राज्य विस्तार उत्तर में माही से दक्षिण में कीम तक तथा पूर्व में मालवा व खानदेश से पश्चिम में समुद्र तक था।

जयभट्ट द्वितीय

- दद्द द्वितीय के बाद उसका पुत्र जयभट्ट द्वितीय शासक बना।
- यह चालुक्यों का सामन्त था।

दद्द तृतीय

- यह जयभट्ट द्वितीय का पुत्र था, जिसने पंचमहाशब्द तथा बहुसहाय नामक उपाधियाँ धारण की।
- इसने वल्मी के शासक शीलादित्य द्वितीय को पराजित किया था।

जयभट्ट चतुर्थ

- यह इस वंश का अन्तिम शासक था।
- इसने अरब आक्रमणकारियों को पराजित किया था।
- इस शाखा के गुर्जर प्रतिहारों के लिए सामंत या महासामंत शब्दों का प्रयोग मिलता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि इन शासकों की स्वतंत्र सत्ता नहीं थी।

था इसलिए यहाँ से गुहिल वंश की सिसोदियाँ शाखा के शासन का प्रारंभ हुआ।

- हम्मीर ने राणा उपाधि का प्रयोग किया। [रावल उपाधि का प्रयोग करने वाला अन्तिम राजा रतन सिंह था।] चूंकि हम्मीर ने चित्तौड़ पर पुनः गुहिल वंश का शासन स्थापित किया इसलिए हम्मीर को यह उपाधि मिली हम्मीर को "मेवाड़ का उद्धारक" कहा जाता है।
- राणा कुम्भा की रसिक प्रिया नामक पुस्तक में हम्मीर को "वीर राजा" बताया गया है।
- बरवड़ी माता मेवाड़ के गुहिल वंश की ईष्ट देवी है और "बाण माता" मेवाड़ के गुहिल वंश की कुल देवी है। सिसोदा गाँव की स्थापना "राहप" ने की थी।

महाराणा क्षेत्रसिंह 1364 – 1382 ई.:-

महाराणा हम्मीर का उत्तराधिकारी उनका **ज्येष्ठ पुत्र क्षेत्र सिंह** बना। इसने अजमेर, मांडल, जहाजपुर, एवं छप्पन के प्रदेशों को विजित किया तथा मालवा के सुल्तान दिलावर खाँ गौरी (मालवा के अमीनशाह के नाम से प्रसिद्ध) परास्त किया। क्षेत्रसिंह ने बूँदी के हाड़ाओं को पराजित कर बूँदी को अपने अधीन किया। तथा ईडर पर आक्रमण कर वहाँ के शासक रणमल को कैद कर लिया।
1382 ई. में क्षेत्रसिंह की मृत्यु हो गई। इसके 7 पुत्र एवं कई औरस पुत्र (जिनमें चाचा व मेरा भी थे हुए।

राणा लाखा (लक्ष सिंह) (1382-1421)

- राणा लाखा के पिता का नाम **राणा क्षेत्र सिंह** था।
- जब राणा लाखा गद्दी पर बैठे, तब मेवाड़ आर्थिक समस्याओं से ग्रसित था, लेकिन लाखा के शासनकाल में ही जावर नामक स्थान पर **चाँदी की खान** निकल आती है जो की एशिया की सबसे बडी चाँदी की खान है, जिससे लाखा की समस्त आर्थिक समस्याएँ हल हो जाती हैं, इसी घटना से राणा लाखा का शासनकाल उन्नति की ओर बढ़ जाता है।
- इनके शासनकाल में **उदयपुर शहर** के बीचों बीच पीछ नामक एक बंजारे ने **पिछोला झील** का निर्माण कराया, यह झील लाखा के शासनकाल में मेवाड़ के लिए पेयजल का एकमात्र साधन रही। राणा लाखा के जीवन का सबसे बड़ा रोचक तथ्य यह था कि इन्होंने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में मारवाड़ के राजा राव की राजकुमारी **हंसाबाई** से विवाह किया, लेकिन यह विवाह इस शर्त पर हुआ कि लाखा का ज्येष्ठ पुत्र कुंवर चूँड़ा मेवाड़ राज्य का उत्तराधिकारी नहीं बनेगा, बल्कि लाखा व रानी हंसाबाई से उत्पन्न पुत्र ही मेवाड़ का उत्तराधिकारी होगा, जो कि आगे चलकर महाराणा मोकल हुए। राणा लाखा एक विद्वान शासक होने के साथ-साथ एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ भी थे, इनके दरबार में भी दो प्रसिद्ध संगीतज्ञ मेवाड़ दरबार की शोभा बढ़ाते थे जिन्हें **धनेश्वर भट्ट व झोटिंग भट्ट** के नाम से जाने जाते थे।
- "कुम्भा हाड़ा" बूँदी की रक्षा करते हुए मारा गया था।
- राणा लाखा के बड़े बेटे का नाम चूँड़ा था। वहीं दूसरी तरफ उस समय मारवाड़ के राजा का नाम भी चूँड़ा था जिसकी पुत्री राजकुमारी" हंसाबाई" की शादी राणा लाखा से कर दी गयी। इस समय लाखा के बेटे चूँड़ा ने यह प्रतिज्ञा ली कि वह मेवाड़ का अगला राजा नहीं बनेगा बल्कि हंसाबाई का बड़ा बेटा ही मेवाड़ का अगला राजा बनेगा। और यही कारण है कि चूँड़ा को "मेवाड़ का भीष्म" भी कहा जाता है। चूँड़ा के इस त्याग के कारण उसे कुछ विशेष अधिकार दिए गए –
- मेवाड़ के 16 प्रथम श्रेणी के ठिकानों में से 4 ठिकाने चूँड़ा को दिए गए और इन चार ठिकानों में सलुम्बर (वर्तमान सलूम्बर जिला) भी शामिल था।
- सलुम्बर का सामन्त मेवाड़ की सेना का सेनापति होगा।
- सलुम्बर का सामन्त मेवाड़ के राजा का राजतिलक करेगा।
- राणा (राजा) की अनुपस्थिति में राजधानी को सलुम्बर का सामन्त ही संभालेगा।
- मेवाड़ के सभी प्रकार के कागजों पर राजा के अतिरिक्त सलुम्बर के सामन्त के भी हस्ताक्षर लिए जायेंगे।
- युद्ध में सेना का जो भाग आगे लड़ता है उसे "हरावल" कहा जाता है जबकि सेना का जो भाग युद्ध में पीछे की तरफ लड़ता है, उसे "चंदावल" कहते हैं।

राणा मोकल (1421-1433)

- राणा मोकल मेवाड़ के राणा लाखा तथा (मारवाड़ की राजकुमारी) रानी **हंसाबाई** के पुत्र थे। मेवाड़ राज्य की विषय परिस्थितियों का दौर राणा लाखा की मृत्यु के बाद प्रारंभ हो गया। राणा मोकल को परिस्थितियाँ विरासत के रूप में प्राप्त हुई, क्योंकि इनके पिता लाखा का विवाह मारवाड़ की राजकुमारी हंसाबाई से वृद्धावस्था में हुआ और बहुत जल्द ही राणा लाखा की मृत्यु (1421 ई.) में हो गयी। मृत्यु के मेवाड़ का शासन हंसाबाई व उसके भाई राव रणमल के हाथों में आ गया, कुंवर चूँड़ा अपने अपमान के कारण **मांडू (मध्य प्रदेश)** चला गया, राणा मोकल का शासनकाल 1421 ई.-1433 ई. के बीच माना जाता है। राणा मोकल ने अपनी पुत्री लाला मेवाड़ी का विवाह गागरोन के शासक अचलदास खींची से कर दी। उन्होंने 1428 ई. के रामपुरा युद्ध में नागौर शासक फिरोज खाँ को पराजित किया। मेवाड़ राज्य में राणा मोकल ने हिंदू परम्परा को स्थापित करने के लिए **तुलादान पद्धति** को लागू किया। इस परम्परा के तहत् मंदिरों के लिए सोना-चाँदी दान के रूप में दिया जाता था। महाराणा मोकल ने एकलिंगजी के मंदिर के परकोटे का निर्माण कराया। इसी प्रकार चित्तौड़ में स्थित त्रिभुवन नारायण मंदिर का पुनः निर्माण इन्हीं के काल में हुआ, जिसे **समधीश्वर मंदिर** के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार कुम्भा से पूर्व राणा मोकल ने मेवाड़ की धार्मिक आस्था को बनाए रखा। राणा को स्थापत्य कला से भी प्रेम था इनके दरबार में फना, मना, विशल नामक वास्तुकार शोभा बढ़ाते थे। एकलिंग मंदिर के परकोटे का निर्माण किया। जब राणा मोकल गुजरात के शासक अहमद शाह के विरुद्ध अभियान पर जा रहे थे तो रास्ते में **जिलवाडा (चारभुजा, राजसमन्द)** नामक स्थान पर राणा क्षेत्र सिंह के दासीपुत्र

चाचा व मेरा ने राणा मोकल की हत्या कर दी इसके उपरांत 1433 ई. में महाराणा कुम्भा गद्दी पर बैठे।

मोकल द्वारा किये मुख्य कार्य :-

- मोकल ने एकलिंगजी मंदिर का परकोटा (चारदिवारी) बनवाया।
- चित्तौड़ में स्थित **समद्धेश्वर मंदिर** का पुनर्निमाण करवाया।
- पहले समद्धेश्वर मंदिर को **"त्रिभुवन नारायण मंदिर"** कहा जाता था। कालांतर में इसे **समद्धेश्वर मंदिर** कहा जाने लगा, इस मंदिर का निर्माण "**भोज परमार**" ने करवाया था।
- 1433 ई. में गुजरात के शासक "अहमदशाह" ने मेवाड़ पर आक्रमण किया, उस समय "मेरा", "चाचा" और "महपा परमार" इन तीनों ने मिलकर जिलवाडा (राजसमंद) में राणा मोकल की हत्या कर दी, ये तीनो मोकल की सेना के व्यक्ति बताये जाते हैं।

राणा कुंभा (1433-1468 ई.)

राणा कुम्भा का जन्म - 1403 ई.

पिता - मोकल
माता - सौभाग्यदेवी
पत्नी - कुंभलमेरू
पुत्र - रायमल, ऊदा

पुत्री - रमाबाई (रमाबाई संगीत व साहित्य में निपुण थी इस कारण जावर शिलालेख (उदयपुर) में वागीश्वरी कहा गया हैं।)

राज्याभिषेक - 1433 ई. चित्तौड़गढ़

गुरू - हिरनांद आर्य

संगीतगुरू - सारंग व्यास, कान्हा व्यास

राणा कुंभा की प्रमुख उपाधियाँ

हालगुरू - पहाड़ी दुर्गो का स्वामी होने के कारण।

राज गुरु - राजनीती में दक्ष होने के कारण।

हिन्दु सुरताण - मुस्लिम इतिहासकारो द्वारा।

अभिनव भरताचार्य - संगीत में विपुल ज्ञान के कारण।

चापगुरू - धनुर्विद्या में निपुण होने के कारण।

दानगुरू
युद्धगुरू
संगीतगुरू
राणे-राय
साहित्य गुरू
राव - राय
स्थापत्य गुरू
अश्वपति
नरपति
शैवगुरू

- राणा कुम्भा ने शासक बनते सबसे पहले के पिता के हत्यारें (चाचा, मेरा व महपा पंवार) से बदला लेने की योजना बनाई। कुम्भा के शासक बनते ही मालवा के शासक मुहमद खिलजी प्रथम की शरण में चले गए (चाचा, मेरा व महपा पंवार) ।
- राणा कुम्भा ने मालवा के शासक मुहमद खिलजी प्रथम पर आक्रमण किया।
- सारंगपुर का युद्ध - 1437 ई. मध्यप्रदेश (मालवा)
- सारंगपुर का युद्ध राणा कुम्भा व महमुद खिलजी प्रथम के मध्य हुआ।
- जिसमे राणा कुम्भा की विजय हुए।
- राणा कुम्भा की इस विजय को मालवा विजय कहा गया तथा इस विजय (सारंगपुर) के उपलक्ष में चित्तैड़गढ दुर्ग में विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया गया ।

वीर विनोद ग्रंथ के अनुसार सारंगपुर युद्ध 1439 ई. में हुआ।

विजय स्तम्भ -

विजय स्तम्भ को विष्णु स्तम्भ भी कहा जाता हैं।

इसका निर्माण 1440 - 1448 के मध्य हुआ।

विजय स्तम्भ कुल 9 मंजिला ईमारत हैं

आंवल - बांवल की संधि (1452 - 53 ई.)

- यह संधि मेवाड़ के राणा कुम्भा और मारवाड़ के राव जोधा के बीच हुई।
- यह सन्धि सोजत (पाली) नामक स्थान पर हुई।
- इस सन्धि के तहत मेवाड़ व मारवाड़ की सीमाओं का निर्धारण हुआ।
- जंहा तक आंवला के पेड़ हैं वहा तक मेवाड़ और जंहा बबुल के पेड़ हे वंहा तक मारवाड़ हॉगा।
- इस सन्धि के के पश्चात राव जोधा ने पुत्री श्रृंगार देवी का विवाह कुम्भा के पुत्र रायमल के साथ करवाय ।

राणा कुंभा का गुजरात से संबंध

- राणा कुंभा के समकालीन गुजरात में कुल 5 शासक आये।
- 1455 ई. में गुजरात के शासक कुतुबुद्दीन शाह ने कुंभलगढ़ पर असफल आक्रमण किया।
- चंपानेर संधि- 1456 ई.
- यह संधि गुजरात शासक कुतुबुद्दीन शाह व मालवा शासक महमूद खिलजी प्रथम के मध्य हुई।
- इनकी योजना थी की गुजरात और मालवा की सयुक्त सेना के मेवाड़ आक्रमण से राणा कुम्भा को पराजित कर मेवाड़ राज्य को आधा आधा आपस में बाँट लेंगे
- इस संधि में कुतबुद्दीन शाह को निमंत्रण महमुद खिलजी-। द्वारा चांद खाँ के माध्यम से भेजा गया।
- चंपानेर संधि के कारन गुजरात व मालवा की संयुक्त सेना 1457 ई. में राणा कुंभा पर आक्रमण किया।
- बदनौर युद्ध या बैराठगढ़ का युद्ध- 1457 ई.
- बदनौर ब्यावर जिले में स्थित हैं।

- करौली राजस्थान की पहली रियासत थी जिसने ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ अधीनस्थ संधि की ।

मारवाड़ का इतिहास

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया हैं । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता हैं । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था । प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये । फिर राठौड़ वंश की स्थापना इस भाग में हुई, तथा मारवाड़ की संकटकालीन राजधानी 'सिवाना दुर्ग (बालोतरा) को कहा जाता था ।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
किशनगढ़	1609 ई.-	किशनसिंह

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे ।

उत्पत्ति

- राठौड़ शब्द की उत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती हैं।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं । ।
- "राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई हैं ।
- डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना हैं । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया हैं ।
- डॉ. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना हैं ।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे । राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं ।
- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की | अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी|
- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया|
- इसी दौरान शाही सेना ने अचानक पाली पर हमला कर लूटपाट शुरू करदी, हमले की सूचना मिलते ही सीहा जी पाली से 18 किलोमीटर दूर बिठू गावं में शाही सेना के खिलाफ आ डटे, और मुस्लिम सेना को खधेड़ दिया | वि. सं. 1330 कार्तिक कृष्ण द्वादशी सोमवार को करीब 80 वर्ष की उम्र में सीहा जी का स्वर्गवास हुआ व उनकी सोलंकी रानी पार्वती इनके साथ सती हुई ।

आसनाथ (1273 – 1291 ई.)

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ ।
- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोक देवता पाबू जी के पिता थे।

राव चूँडा (1383 – 1423)

- राव चूँडा विरमदेव का पुत्र था ।
- राव चूँडा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता हैं। अपने पिता की मृत्यु के समय चूँडा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँडा को सालोड़ी गाँव जागीर में दी थी ।
- उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डौर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।
- चूँडा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूँडा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।
- उसने जलाल खाँ खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।
- परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगल प्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँडा मारा गया ।
- राव चूँडा ने डीडवाना-कुचामन में चूण्डासर कस्बा बसाया।
- उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया था ।

रावल मल्लिनाथ

राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता हैं इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (जाकोड़ा, बालोतरा) बनायी। मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।

• हस्तशिल्प

- राजस्थान की हस्तशिल्प विश्व प्रसिद्ध है इसलिए राजस्थान को हस्तकलाओं का अजायबघर / खजाना कहा जाता है।
- हस्तकला उद्योग केन्द्र बोरानाडा, जोधपुर में है।
- हस्तकलाओं का तीर्थ जयपुर को कहते हैं।
- राजस्थान में हस्तकला उद्योग को सर्वाधिक सरक्षण देने वाला संस्थान राजसीको है जिसकी स्थापना 3 जून, 1961 को जयपुर में की गई थी। राजस्थान की हस्तशिल्प वस्तुओं को राजस्थान लघु उद्योग निगम राजस्थली नाम से विपणन करता है।
- वर्ष 1998 की ओद्योगिक नीति में हस्तकला उद्योग को सर्वाधिक सरंक्षण दिया गया है।

❖ पॉटरी

- चीनी मिट्टी के बर्तनों पर की जाने वाली आकर्षक चित्रकारी पॉटरी कहलाती है।
- पॉटरी का उद्भव दमिश्क (सीरिया की राजधानी) में माना जाता है जो फारस, अफगानिस्तान होती हुई भारत आयी।

❖ ब्लू पॉटरी

- चीनी - मिट्टी के बर्तनों पर नीले रंग से चित्रकारी करना।
- इसके लिए जयपुर प्रसिद्ध है।
- राजस्थान में इसे लाने का श्रेय मानसिंह को है।
- इस कला का सर्वाधिक विकास जयपुर शासक रामसिंह द्वितीय के समय हुआ था।
- इस कला को पुर्नजिवित करने का श्रेय कृपाल सिंह शेखावत को है जिनका जन्म स्थान सीकर जिला है।
- कृपाल सिंह शेखावत को 1974 में पद्म् श्री पुरस्कार दिया जा चुका है।
- ब्ल्यू पॉटरी की एकमात्र महिला कलाकार नाथी बाई है।

❖ ब्लेक पॉटरी

- ब्लेक पॉटरी कोटा की प्रसिद्ध है।

❖ कागजी पॉटरी

- कागजी पॉटरी अलवर की प्रसिद्ध है।

❖ मोलेला पॉटरी

- मोलेला पॉटरी राजसमन्द की प्रसिद्ध है ।

❖ बीकानेरी पॉटरी (सुनहरी पॉटरी)

- इस पॉटरी में लाख का प्रयोग किया जाता है ।

❖ मूनव्वती / उस्ता कला

- इस कला में ऊँट की खाल पर सुनहरी नक्काशी की जाती है।
- यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है।
- हीसामुद्दीन उस्ता कला के प्रमुख चित्रकार हैं, जिन्हें इस कला के लिए वर्ष 1986 में पद्मश्री दिया गया था। मुहम्मद हनीफ उस्ता, कादर बक्श इसके कारीगर हैं ।
- उस्ताकला को बढ़ावा देने हेतु बीकानेर में कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर की स्थापना 15 अगस्त, 1975 को की गई थी जिसके प्रथम निदेशक हीसामुद्दीन उस्ता को बनाया गया था।
- इलाही बक्श ने ऊँट की खाल पर बीकानेर शासक महाराजा गंगासिह का चित्र बनाया ।

❖ मथैरणा कला

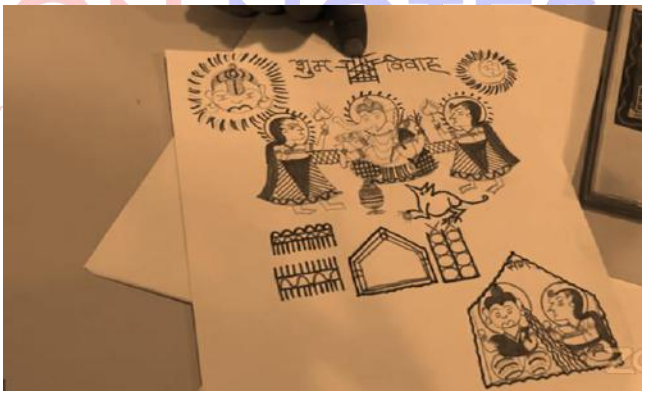

- इस कला में कपड़े पर सुनहरी नक्काशी की जाती है। यह कला बीकानेर की प्रसिद्ध है। इस कला में ईसर, गणगौर, देवी - देवताओं की भीत्ति चित्र बनाये जाते हैं । मुन्नालाल, चन्दूलाल मथैरणा कला के प्रमुख कारीगर थे।

❖ मीनाकारी

- विभिन्न रंगों की मूल्यवान रत्नों पर मीने की सहायता से तथा सोने - चाँदी के आभूषणों पर चित्रकारी या रंग भरने की कला को मीनाकारी कहते हैं।
- मीनाकारी कला का उद्भव पर्शिया (ईरान) में माना जाता है।
- इसे चौंसरों के समय फारस में लाया गया और फारस से मुगलों द्वारा लाहौर में लायी गई जहाँ पर सिक्खों द्वारा यह कार्य किया जाता है।
- लाहौर से महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा आमेर में लाया गया।
- जिसमें मुख्य मीनाकार हरिसिंह, अमरसिंह, किशनसिंह, गोभासिंह, श्यामसिंह थे।
- **राज्य में निम्न मीनाकारी प्रसिद्ध है ;-**

(i)चाँदी पर मीनाकारी- नाथद्वारा, राजसमंद
(ii)पीतल पर मीनाकार जयपुर
(iii)तांबे पर मीनाकारी- भीलवाड़ा
(iv)सोने पर मीनाकारी- प्रतापगढ़

- वर्तमान में जयपुर की मीनाकारी प्रसिद्ध है, जिसमें मुख्य रूप से कुदरतसिंह तथा मुन्ना लाल (गुरूचरण सिंह) विख्यात है।
- सरदार कुदरत सिंह को 1988 में इस काल के लिए पद्म श्री पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

❖ **थेवा कला**

- थेवा कला प्रतापगढ़ की प्रसिद्ध है।
- थेवा कला का नाम इनसाइक्लोपिडिया ऑफ ब्रिटेनिका में अंकित है।
- काँच पर सोने या चाँदी का सूक्ष्म चित्रांकन जिसमें रंगीन बेल्जियम काँच का प्रयोग किया जाता है । इस कला की शुरूआत लगभग 500 वर्ष पूर्व नाथूजी सोनी ने महाराजा सावंत सिंह के समय प्रतापगढ़ में की थी।
- इस कला के लिए प्रतापगढ़ का सोनी परिवार विख्यात है।
- इसे सोनी परिवार भारत का एकमात्र ऐसा परिवार है जिसे किसी हस्तकला के लिए एक ही परिवार के सर्वाधिक व्यक्तियों को राष्ट्रपति पुरस्कार दिया जा चुका है।
- थेवा कला के कारीगर पन्नीगर कहलाते है।

❖ **रत्नाभुषण**

- हीरे - जवाहारात-पन्ना का कार्य रत्नाभुषण कहलाता है।
- विश्व की सबसे बड़ी मण्डी जयपुर है।

❖ **कोफ्तगिरी**

- राजस्थान में इसके प्रमुख केन्द्र जयपुर व अलवर है।
- कोफ्तगिरी का कार्य दमिश्क से पंजाब लाया गया और पंजाब से गुजरात तथा गुजरात से राजस्थान लाया गया।
- फौलाद की बनी वस्तुओं पर यह काम सोने के पतले तारों की जड़ाई द्वारा किया जाता है।

❖ **पिछवाई कला**

- कपड़े पर चित्रित उस चित्र शैली का नाम है जिसे मन्दिरों में ' मूर्ति के पीछे ' की दीवार को ढ़कने और सुन्दर दिखाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
- राजस्थान में पिछवाई कला का विकास 1700 ई. के आस - पास माना जाता है।
- पिछवाई बनाने वाले कलाकारों में लच्छीराम का नाम सर्वाधिक प्रचलित है।
- पिछवाई कला को जीवन्त जाग्रत रखने वाले कलाकारों में घनश्याम निम्बाई और कैलाश शर्मा का नाम लिया जाता है।
- पिछवाई कला का उल्लेख रॉबर्ट स्केलटन की पुस्तक 'राजस्थानी टेम्पल हैंगिग्स ऑफ दि कृष्ण कल्ट' में हुआ ।
- पिछवाई कला केन्द्रों में नाथद्वारा, कांकरोली, कोटा, अलवर है।

❖ **बादला**

राजस्थान के प्रमुख शोध संस्थान –

संस्थान का नाम	मुख्यालय
राजकीय संग्रहालय	झालावाड़
श्री सरस्वती पुस्तकालय	फतेहपुर (सीकर)
पुस्तक प्रकाश पुस्तकालय	जोधपुर
पोथीखाना (महत्त्वपूर्ण)	जयपुर
सरस्वती भण्डार	उदयपुर
रूपायन संस्थान	जोधपुर
बिड़ला तकनीकी म्यूजियम	पिलानी (झुंझुनू)
राजस्थानी शोध संस्थान	चौपासनी(जोधपुर)
राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी	जयपुर
राजस्थानी साहित्य अकादमी	उदयपुर
राजस्थान संस्कृत अकादमी	जयपुर
राजस्थान उर्दू अकादमी	जयपुर
राजस्थान सिंधी अकादमी	जयपुर
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी	जयपुर
पंडित झाबरमल शोध संस्थान	जयपुर
राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी	बीकानेर
सरदार म्यूजियम	जोधपुर

अभ्यास प्रश्न

1. किस संग्रहालय में कुम्हारों की कलाकृतियाँ, देवी देवताओं की टेराकोटा की मूर्तियां भी प्रदर्शित हैं ?
(a) कालीबंगा संग्रहालय
(b) आहड़ संग्रहालय
(c) बागौर का संग्रहालय
(d) जनजाति संग्रहालय
उत्तर :- d

2. निम्न में से किस संग्रहालय की गैलरियाँ की आकृतियाँ अंग्रेजी वर्णमाला के U के आकार की हैं ?
(a) राजपुताना संग्रहालय
(b) बागौर संग्रहालय
(c) कालीबंगा संग्रहालय
(d) आहड़ संग्रहालय
उत्तर :- c

3. पुरावशेषों के संरक्षण हेतु कालीबंगा संग्रहालय की स्थापना कहाँ की गयी।
(a) हनुमानगढ़ (b) कालीबंगा में
(c) श्रीगंगानगर (d) रंगमहल **उत्तर :- d**

4. ईरान के शासक शाह ने मिर्जा राजा जयसिंह को एक गलीचा भेट किया, वर्तमान में यह गलीचा किस संग्रहालय में संग्रहित है ?
(a) अल्बर्ट हॉल, जयपुर
(b) राजकीय संग्रहालय, अजमेर
(c) राजकीय संग्रहालय हवामहल, जयपुर
(d) डॉल संग्रहालय, जयपुर
उत्तर :- a

5. मैंगजीन व राजपुताना संग्रहालय के नाम से प्रसिद्ध संग्रहालय स्थित है ?
(a) उदयपुर (b) जयपुर
(c) जोधपुर (d) अजमेर **उत्तर :- d**

6. राजकीय संग्रहालय अजमेर की स्थापना किस वर्ष की गयी ?
(a) 1906 ई. (b) 1908 ई.
(c) 1910 ई. (d) 1912 **उत्तर :- b**

7. अल्बर्ट हॉल के वास्तुकार कौन थे ?
(a) स्टीफन कॉल्विन (b) स्टीफन जैकब
(c) स्टीफन निक्सन (d) स्टीफन जॉर्ज
उत्तर :- b

8. किराडू से प्राप्त सुर सुंदरी व लोद्रवा से प्राप्त अर्धनारीश्वर की प्रतिमाएं किस संग्रहालय में सुरक्षित हैं ?
(a) जैसलमेर संग्रहालय में
(b) बागौर संग्रहालय
(c) जनजाति संग्रहालय में
(d) सिटी पैलेस उदयपुर में
उत्तर :- a

9. प्राचीन जीवाश्म, हथियार व प्राचीन सिक्के किस संग्रहालय में संग्रहित हैं ?
(a) उदयपुर में (b) जैसलमेर में
(c) पाली (d) सीकर **उत्तर :- b**

10. जैसलमेर संग्रहालय की स्थापना कब हुई ?
(a) 1980 ई. (b) 1981 ई.
(c) 1983 ई. (d) 1984 ई **उत्तर :- d**

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/29dvxg 1 web.- https://rb.gy/8kw806

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
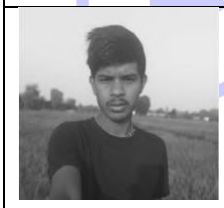	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
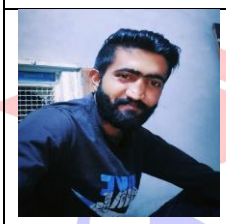	**Govinda Jangir**	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/29dvxg

Online Order करें - https://rb.gy/8kw806

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE